प्रथम अध्याय

दक्षिण भारत के राज्य

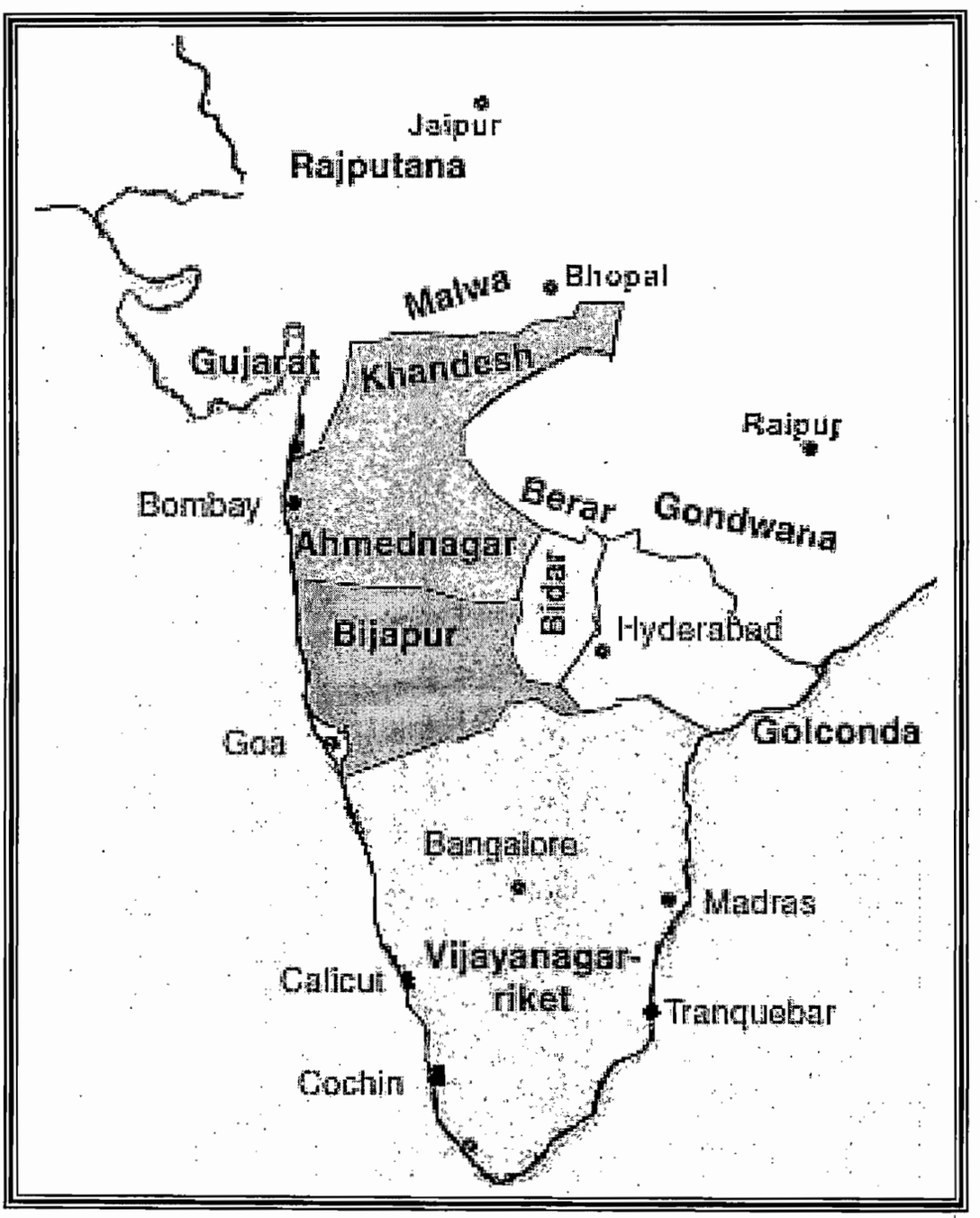

प्रथम अध्याय

समकालीन राजनैतिक परिदृश्य

दक्षिण भारत की राजनीतिक स्थिति

1.1 तुगलक साम्राज्य का पतन

मुहम्मद तुगलक जिस समय सिंहासन पर बैठा, उस समय उड़ीसा, असम, नेपाल और कश्मीर को छोड़कर लगभग समस्त भारतीय राज्य दिल्ली सल्तनत के अधीन थे। किन्तु इस वंश के अन्तिम शासक नासिरुद्दीन महमूद के शासन काल में वह सिकुड़कर एक छोटा सा राज्य रह गया। उसके विषय में एक कहावत प्रचलित थी, **"खुदा बन्दे आलम देहली टू पालम[1]" (जगत के स्वामी का शासन दिल्ली से पालम तक फैला हुआ है)**[2]।

तुगलक साम्राज्य के पतन तथा विघटन के बहुत से कारण थे। मुहम्मद तुगलक का चरित्र तथा नीति साम्राज्य के पतन के मुख्य कारणों में से एक है। उसकी काल्पनिक योजनाओं, अत्यन्त कठोर दण्डों तथा उन्मत्त विजय नीति साम्राज्य के पतन के कुछ अन्य कारण हैं।[3]

मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण में साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करते हुए दक्षिण के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था। उसने दक्षिण की

---

1 पालम दिल्ली से लगभग सात मील की दूरी पर अवस्थित एक स्थान है, जहाँ हवाई अड्डा है। वर्तमान समय में इसका नाम इन्दिरा गाँधी अन्तराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।

2 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा - 3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 176।

3 वही, पृ0 176।

विजय ही नहीं की, वरन् वहाँ एक सुदृढ़ प्रशासन स्थापित करने का भी प्रयास किया। उसके द्वारा संस्थापित प्रशासनिक अंगों में अमीरान-ए-सदह बहुत महत्वपूर्ण थे। ये अधिकारी 'सादी' भी कहलाते थे और इनकी स्थिति सल्तनत के अमीरों की भाँति थी। ये 'सादी'[1] न केवल राजस्व वसूल करते थे, वरन् स्थानीय सैनिक टुकड़ियों के भी प्रधान थे। ऐसी स्थिति के करण जनता उन्हें ही शासन का वास्तविक कर्णधार मानती थी। इनके हाथों में सेना और राजस्व दोनों के केंद्रीभू होने के कारण ये बहुत अधिक शक्तिशाली थे और ये शासन के एक महत्वपूर्ण अंग हो गये।[2]

यदि हम इसके उत्तराधिकारियों की बात करें तो फिरोज ने अपने पूर्वाधिकारी द्वारा किये जनता के घावों को भरने का प्रयत्न किया, किन्तु उसकी उदारता, धार्मिक असहिष्णुता, सामन्ती - प्रथा की पुनः स्थापना तथा सैनिक अनुशासन और सुयोग्यता को नष्ट करने की नीति ने राजसत्ता की जड़ों को खोखला कर दिया और शासन व्यवस्था को इतना दुर्बल बना दिया कि उसमें पुनः जीवन डालना असम्भव हो गया। तुगलक वंश के परवर्ती सुल्तान अयोग्य एवं महत्वहीन थे और भोग-विलास में लिप्त रहने के कारण शक्तिशाली अमीरों के हाथों की कठपुतली बन गये थे। उनमें से किसी भी सुल्तान में इतनी राजनैतिक सूक्ष्मदर्शिता तथा बुद्धि नहीं थी कि वह एक उपयुक्त व्यक्ति को अपना प्रधान मंत्री चुनकर उसे पूर्ण विश्वास तथा समर्थन प्रदान करता। योग्य

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा - 3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 239।

2 मध्यकालीन भारत (8वीं से 18वीं शताब्दी) एक सर्वेक्षण - इमत्याज़ अहमद, नेशनल पब्लिकेशन पटना, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 123।

संचालक के अभाव के कारण गृह युद्ध होने लगे।[1] यदि तुगलक वंश के पतन के कारणों पर एक दृष्टि डालें तो वे निम्नलिखित है-

1. तुगलक शासकों का दक्षिण भारत को अपने राज्य में सम्मिलित करना।
2. मुहम्मद बिन तुगलक की असफलताएँ।
3. फिरोज शाह की दुर्बल तथा प्रतिक्रियावादी नीति।
4. फिरोज के अयोग्य उत्तराधिकारी।
5. सरदारों में योग्यता तथा नैतिकता का अभाव।
6. तैमूर का आक्रमण।[2]

इस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों के कारण तुगलक वंश का पतन हुआ। मुहम्मद तुगलक और फिरोज जैसे शासक भी इसके लिए उत्तरदायी थे, परन्तु मूलतः फिरोज के उत्तराधिकारियों की अयोग्यता ही इसके लिए उत्तरदायी थी।[3]

इन अराजकताओं की स्थिति को देखते हुए, अनेक प्रान्तीय सूबेदारों ने अनुभव किया कि विद्रोह तथा स्वतन्त्रता पर ही हमारी सुरक्षा अवलम्बित है। इसी भावना के परिणामस्वरूप दक्षिण में विजयनगर तथा बहमनी राज्यों की स्थापना हुई।[4]

---

1 भारत का इतिहास - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 177।

2 मध्यकालीन भारत - एल0 पी0 शर्मा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा, संस्करण सन् 1994 ई0, पृ0 173-74।

3 मध्यकालीन भारत (8वीं से 18वीं शताब्दी) एक सर्वेक्षण - इमत्याज़ अहमद, नेशनल पब्लिकेशन पटना, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 105-06।

4 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा - 3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 176-77।

1.2 विजयनगर साम्राज्य की स्थापना

14वीं शताब्दी के प्रथम चरण में द्वारसमुद्र के होमसलों के अतिरिक्त लगभग संपूर्ण दक्षिण भारत को दिल्ली सल्तनत में शामिल किया जा चुका था। मुहम्मद तुगलक ने उन प्रदेशों पर अपनी सत्ता को मजबूत बनाने के लिए न केवल प्रदेशों को प्रांतों में विभाजित किया वरन् दौलताबाद में नई राजधानी की स्थापना की। मुहम्मद बिन तुगलक को दक्षिण में सबसे अधिक विद्रोहों का सामना करना पड़ा।[1]

सन् 1325 ई0 में मुहम्मद बिन तुगलक के चचेर भाई बहाउद्दीन मुर्शव ने कर्नाटक में सागर नामक स्थान पर विद्रोह कर दिया और सुल्तान को स्वयं उनके दमन के लिए दक्षिण आना पड़ा। इस पर बहाउद्दीन ने भागकर कर्नाटक में स्थित कंपिली के राजा के पास शरण ली। मुहम्मद तुगलक ने कंपिली पर आक्रमण करके उसे भी दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया।[2]

कंपिली की विजय के दौरान मुहम्मद तुगलक ने उस राज्य के अधिकारियों में हरिहर और बुक्का नामक दो भाइयों को बंदी बना लिया और उन्हें बंदी हालत में दिल्ली ले आया गया।[3]

बहाउद्दीन के विद्रोह के बाद तुगलक शासन में विद्रोहों की शृंखला प्रारम्भ हो गयी। आन्ध्र में प्रोलाय और कापय[4] नामक दो भाइयों ने तुगलक शासन के विरुद्ध शक्ति युद्ध आरम्भ कर दिया। इस प्रकार आन्ध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 199।

2 वही, पृ0 199।

3 विजयनगर साम्राज्य - डॉ0 आर0 एन पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण 2004, पृ0 4।

4 मुस्लिम इतिहासकार कन्हय नायक कहते थे।

और आधुनिक महाराष्ट्र के सारे प्रदेशों में तुगलक शासन के विरुद्ध विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी।[1]

इन विद्रोहों की स्थिति से आशंकित होकर मुहम्मद बिन तुगलक ने हरिहर और बुक्का को मुक्त करके तुगलक सेनापति के रूप में दक्षिण भेजने का निश्चय किया। हरिहर और बुक्का तुगलक सेनाओं के साथ कंपिली आएँ और उन्होंने कंपिली के विद्रोह का दमन कर दिया।[2]

ये हरिहर और बुक्का कौने थे? सुल्तान के दरबार में कैसे पहुँचे? इस बारे में निश्चित रूप से कुछ ज्ञात नहीं है। **नीलकंठ शास्त्री ने बताया है कि ये पाँच भाइयों के एक परिवार के सदस्य थे।** ये पाँचों भाई संगम के पुत्र थे। समस्त परम्पराओं, मुस्लिम इतिहासकारों तथा अभिलेखिक साक्ष्यों से प्राप्त तथ्यों के सम्मिलित अनुशीलन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रारम्भ में ये वारंगल के शासक के यहाँ थे। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा वारंगल पर अधिकार कर लिए जाने पर ये कंपिली आ गये, जब सुल्तान ने सन् 1326 ई0 में कंपिली पर अधिसत्ता स्थापित कर ली तो ये भी बंदी के रूप में दिल्ली दरबार जाने के लिए मजबूर हो गये। सुल्तान के विरुद्ध जब कंपिली में पुनः विद्रोह की आग भड़की तो सलाहकारों के परामर्श पर सुल्तान ने इन दोनों भाइयों को इसे दबाने के लिए सेना सहित भेजा। इन्होंने अपने दायित्व को बखूबी अन्जाम दिया।[3]

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डा0 नीलकंण्ठ शास्त्री, पृ0 203।

2 विजयनगर साम्राज्य, डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 5।

3 वही, पृ0 5।

इसी समय ये सन्त विद्यारण्य के सम्पर्क में आए।[1] सन्त के बहुमूख्य उपदेशों से प्ररित होकर इन लोगों ने इस्लाम धर्म परित्याग कर पुनः हिन्दू धर्म को अंगीकार कर लिया। (इन्हें बलात् इस्लाम का अनुयायी बना दिया गया था।) प्रारम्भ में रूढ़िवादी हिन्दुओं ने इसका विरोध किया। उनका विश्वास था कि ये हिन्दू धर्मानुसार आचरण नहीं करेंगे। किन्तु विद्यारण्य[2] के गुरु विद्यातीर्थ के हस्तक्षेप से लोगों का भ्रम दूर हो गया। विद्यारण्य ने हरिहर को भगवान् विरुपाक्ष का प्रतिनिधि घोषित कर दिया। कुछ दिन बाद उचित अवसर देखकर इन्होंने दिल्ली सुल्तान की ओर से मुँह मोड़ कर अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी तथा ये स्वतंत्र हिन्दू राज्य की स्थापना में लग गये। इनके द्वारा स्थापित साम्राज्य विजयनगर (जीत की नगरी) के नाम से जाना गया। विद्यारण्य के नाम पर इन्होंने विद्यानगर (विद्या की नगरी) नामक नगर की स्थापना की। 18 अप्रैल सन् 1336 ई0 में भगवान् विरुपाक्ष को साक्षी मानकर भारतीय परम्परानुसार हरिहर ने अपना राज्याभिषेक सम्पन्न कराया[3] और विजयनगर को राजधानी बनाकर शासन करने लगे।[4]

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा - 3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 220।

2 विद्यारण्य की ठीक - ठीक पहचान नहीं हो सकी है। कुछ विद्वान इनकी पहचान सायणाचार्य के अग्रज माधवाचार्य से करते है। यह विजयनगर के प्रथम प्रधान मंत्री थे। दूसरे विद्वान इन्हें श्रंगेरी मठ (कर्नाटक के चिकमंगलूर में तुंग तथा भद्रा नदियों के संगम स्थल पर स्थित) के बारहवें शंकराचार्य विद्यारण्य भारती से समीकृत करते है।

3 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकंण्ठ शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 204।

4 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा - 3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 220।

इस प्रकार मुहम्मद बिन तुलगक के दो वफादार प्रतिनिधि जो उसकी ओर से दक्षिण में विद्रोह के दमन के लिए भेजे गये, समयान्तर से दक्षिण के एक महान् साम्राज्य के संस्थापक बने। जो अपने स्थापना काल से लगभग सवा दो शताब्दियों तक दक्षिण की प्रमुख शक्ति का केन्द्र बना रहा।

परन्तु दक्षिण के अन्य राज्य अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बरार तथा बीदर से इसकी आपसी प्रतिद्वन्द्विता चलती रही, अन्त में दक्षिणी राजाओं ने संघ बनाकर सन् 1565 ई0 में तालिकोटा के युद्ध में इस राजवंश को समाप्त कर डाला।

विजयनगर साम्राज्य में निम्नलिखित चार राजवंशों ने शासन किया-

1. संगम वंश
2. सालुव वंश
3. तुलुव वंश
4. आरवीडु वंश

1. संगम वंश

हरहिर प्रथम तथा बुक्का प्रथम ने विजयनगर में जिस राजवंश की स्थापना की, वह इनके पिता संगम के नाम पर 'संगम वंश' के नाम से प्रसिद्ध है। राज्य स्थापना में इनके तीन अन्य भाइयों ने भी भरपूर सहायता की थी। इस प्रकार पाँच संगम पुत्र विजयनगर सम्राज्य के असली संस्थापक थे।[1]

---

1 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 7।

(क) हरिहर प्रथम

18 अप्रैल 1336 ई0 को भगवान् विरुपाक्ष की उपस्थिति में हरिहर प्रथम ने विहित हिन्दू रीति से अपना राज्याभिषेक समारोह सम्पन्न किया और संगम वंश का प्रथम शासक बना। कृष्णा नदी से दक्षिण की सारी भूमि देवता की मानी जाती थी और हरिहर ने देवता के अभिकर्ता के रूप में राज्य का शासन भार ग्रहण किया तथा श्री विरुपाक्ष के हस्त चिन्ह से ही राज्य के सभी कामों का प्रमाणीकरण शुरू किया।[1]

हरिहर प्रथम ने स्वतंत्र शासक की हैसियत से जिस समय दक्षिण की सत्ता हाथिया ली। दक्षिण-पूर्व में नेल्लोर से लेकर उत्तरी कर्नाटक में धारवाड़ तथा बादामी तक का प्रदेश इसके राज्य में था। किन्तु राज्य के चारों ओर से सशक्त प्रतिद्वन्द्वियों से घिरे होने के कारण यह सुरक्षित नहीं था। इस विषम तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में राजसत्ता ग्रहण के बाद सबसे पहले हरिहर प्रथम ने राज्य के आन्तरिक सुदृढ़ीकरण की ओर ध्यान दिया। अभी तक इसकी राजधानी तुंगभद्रा के तट पर अनेगोण्डी में थी। पहाड़ी पर स्थित होने के बावजूद भी यह अति सुरक्षित नहीं थी। अतएव नदी के दूसरे किनारे विरुपाक्ष मन्दिर के समीप हेमकूट, मतंग तथा मालयवन्त पहाड़ियों से घिरे अति सुरक्षित स्थान पर विजय अथवा विद्यारण्य नाम से नयी राजधानी की नींव डाली। बाद में यही विजयनगर के नाम से विख्यात हुई, जिसके ध्वंसावशेष वर्तमान हम्पी में विद्यमान हैं।[2]

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 204।

2 अनुश्रुतिक साक्ष्यों से पता चलता है कि विजयनगर की स्थापना विद्यारण्य की सलाह पर की गयी थी। किन्तु हरिहर प्रथम तथा इसके उत्तराधिकारियों के लेखों में राजधानी के निर्माण के प्रसंग में विद्यारण्य का नाम कहीं कहीं मिलता। फरिश्ता कहता है कि विजयनगर की स्थापना बल्लाल तृतीय ने की तथा अपने पुत्र विजेनराय के नाम पर बिजयनगर (विजयनगर) नाम रखा। किन्तु फरिश्ता का विवरण इस समबन्ध में सही न होने के कारण इस मत को स्वीकार करना उचित नहीं है।

राज्य की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा का यथासंभव प्रबन्ध करने के पश्चात् उसने राज्य की स्थिरता के मूल आधार प्रशासन की ओर ध्यान दिया। काकतीय आदर्श का अनुकरण करते हुए उसने देश स्थलों और नाड्डलों में संगठित किया और कारणामों के रूप में ब्राह्मणों की नियुक्ति करना शुरू किया।[1]

सन् 1346 ई0 में बुक्का प्रथम ने इसके समय होयसल राज्य पर अधिकार कर लिया। हरिहर प्रथम के सामरिक जीवन की यह एक बड़ी उपलब्धि थी। इसके बाद बनवासी के कदम्बों तथा मदुरा के सुल्तानों को सीधे चुनौती दी।[2]

हरिहर प्रथम का सम्पूर्ण शासन काल महान् राजनैतिक घटना का काल रहा है। यद्यपि हरिहर प्रथम ने किसी युद्ध अथवा सैन्याभियान में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया, लेकिन इसके सम्बन्धियों ने जो सफलताएँ अर्जित कीं वह इसकी युद्ध योजना की सूझ-बूझ तथा प्रशासनिक क्षमता का ही परिणाम था। हरिहर का शासन काल "अटूट शान्ति" का काल था।[3] हरिहर प्रथम निःसन्तान था। अतएव अपने जीवन काल में ही इसने अपने भाइयों में योग्यतम बुक्का प्रथम को अपना उत्तराधिकारी बना दिया था।

(ख) बुक्का प्रथम

हरिहर प्रथम के साथ सह शासक के रूप में शासन संचालन करते हुए, बुक्का प्रथम भी उसी के समान महान् योद्धा, राजनीतिज्ञ तथा कुशल प्रशासक बन गया था। इसे "राजसिंहासन का अवलम्ब"[4] कहा गया।

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 227।

2 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 7।

3 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 227।

4 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 8-9।

विदेशी मामलों के तहत इसने चीन में एक दूत भेजा तथा आन्तरिक मामलों में बहमनी, सुल्तानों, मुहम्मद प्रथम और मुजाहिद के साथ लड़ाइयाँ हुईं। गुलबर्गा के सिंहासन पर सन् 1378 ई0 में जब मुहम्मद द्वितीय बैठा तब जाकर इन लड़ाइयों पर विराम लगा, क्योंकि नया सुल्तान शान्तिप्रिय था।[1] **फरिश्ता कहता है कि बहमनी के विरुद्ध संघर्ष में सन्धि के तहत कृष्णा नदी दोनों राज्य की सीमा मान ली गयी।** अन्य विजयों में इसने कोण्डवीडु तथा मदुरा पर विजय प्राप्त की।

इसके समय में विजयनगर साम्राज्य का चतुर्दिक विस्तार हुआ। इसने **"वेदमार्ग प्रतिष्ठा" की उपाधि धारण की।** इसके संरक्षण में तेलुगु महाकवि नचन सोम के निदेशन में तेलुगु साहित्य की भी यथेष्ट उन्नति हुई।[2]

बुक्का प्रथम के कई पुत्र थे। प्रश्न यह था कि यह किसे अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करे ? अन्ततः काफी सोच-विचार के बाद इसने अपनी **गौराम्बिका नामक** रानी से उत्पन्न पुत्र हरिहर द्वितीय को उत्तराधिकारी मनोनीत किया।[3]

---

3 ए फारगोट्न एम्पायर - आर0 सेवेल, लन्दन 1900, पृ0 51।

4 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 228।

1 वही, पृ0 128।

2 एकम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, पियूपिल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली, जिल्द पाँच, संस्करण 1970 ई0, पृ0 1048।

3 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 13।

(ग) हरिहर द्वितीय

फरवरी 1377 ई0 को बुक्का प्रथम की मृत्यु के बाद हरिहर द्वितीय सिंहासन पर बैठा। हरिहर ने अपने भाइयों के स्थान पर अपने पुत्रों को प्रान्तों का गर्वनर बनाया और उत्तर पश्चिम में मुसलमानों के कब्जे से गोआ, चोल और दबाले बन्दरगाह और खरेपटन भी ले लिया गया और कुछ समय के लिये कृष्णा नदी विजयनगर की उत्तरी सीमा बन गयी। कोंदवीदु के रेडियो से कुर्नुल, नेलोर और गुर्टुर के हिस्से छीन लिये और राजकुमार विरुपाक्ष ने श्रीलंका पर आक्रमण कर उसे करद राज्य बनाया।[1]

सन् 1398-99 ई0 में विजयनगर और बहमनी राज्यों के बीच एक भयानक लड़ाई हुई जिसमें फिरोज ने हरिहर द्वितीय की सेनाओं को खदेड़ दिया। अन्ततः सन्धि के लिये बाध्य होना पड़ा। हरिहर ने फिरोज को सालाना कर देना स्वीकार किया था पर दो साल बाद जब मालवा और गुजरात के सुल्तानों के साथ उसकी मित्रता हो गयी तो उसने यह कर देना बन्द कर दिया।[2]

हरिहर द्वितीय ने सत्ताइस वर्षों तक शासन किया और समूचे दक्षिण भारत में विजयनगर की प्रधानता सुदृढ़ की और दक्षिण भारत की महान् शक्ति बना दिया।[3] सुप्रसिद्ध आचार्य सायण जो माधव का भाई तथा उसका मुख्य मंत्री था।[4]

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 229।

2 वही, पृ0 229।

3 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 16।

4 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 229।

हरिहर द्वितीय अगस्त 1404 ई0 में मर गया तो उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के प्रश्न पर बहुत झगड़ा हुआ। सबसे पहले विरुपाक्ष सिंहासन पर बैठा पर उसे बुक्का द्वितीय ने हटा कर दो वर्ष तक शासन किया, अन्त में देवराय प्रथम सिंहासन पर बैठा।

(घ) देवराय प्रथम

5 नवम्बर 1406 ई0 में सिंहासन पर बैठा।[1] देवराय के शासन के प्रारम्भ में फिरोज शाह बहमनी से उसकी लड़ाई हुई। **फरिश्ता ने इस लड़ाई का कारण बताया है, कि हिन्दू सम्राट मुद्गल में रहने वाली एक सुन्दरी के प्रति मोहित था।** अन्य विवरणों के अनुसार इस लड़ाई का कारण यह था कि फिरोज हिन्दू सम्राट के प्रति जेहाद[2] छेड़ने के लिए कृत संकल्प था। पहले तो इस लड़ाई में फिरोज की हार हुई, पर बाद में शन्ति स्थापित हो गई जिसकी शर्ते हिन्दू सम्राट के लिए अपमानजनक थी। उसे बंकापुर का महत्वपूर्ण किला देना पड़ा, जहाँ से विजयनगर से अरब सागर तक महत्त्वपूर्ण रास्ता नियंत्रित होता था। साथ ही देवराय को अपनी एक पुत्री भी सुल्तान से ब्याह देनी पड़ी।[3]

कृष्णा और गोदावरी के बीच के क्षेत्र का तेलुगु चोड़ प्रधान अनदेव फिरोज का दूसरा मित्र था। उसके प्रभाव को निष्फल करने के लिए देवराय ने काटयवेम जो कि उसध्के बहन का पति था; से सन्धिकर ली। सन् 1455 ई0 में लड़ाई शुरु हुई जिसमें काटयवेम मारा गया। देवराय की भी हार हुई। बाद में

---

1 भारत का वृहत इतिहास - मजूमदार, राय चौधरी, दत्त, मैक्मिलन इण्डिया लिमिटेड, हैदराबाद, जल्द दो, संस्करण सन् 1991 ई0, पृ0 95।

2 जेहाद धार्मिक युद्ध को कहते है।

3 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 230।

देवराय ने पगल पर कब्जा करके इसका प्रतिशोध लिया। इन लड़ाइयों में देवराय का साथ वीर विजय राय और मंत्री लक्ष्मीधर ने दिया।[1]

सेवेल ने बताया है कि उसका सबसे बड़ा कार्य तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनवाना बताया है।[2] इसके समय इतालवी यात्री निकोली कोण्डी विजयनगर आया। देवराय परम शैव था तथा पम्पा देवी का उपासक था। देवराय प्रथम का स्वर्णिम शासन काल सन् 1422 ई0 में उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो गया।[3] मृत्यु के बाद कुछ महीनों के लिए उसका पुत्र रामचन्द्र सिंहासन पर बैठा और उसके बाद दूसरा पुत्र वीर विजय ने गद्दी सम्भाली।

(ङ) वीर विजय राय

कुछ विद्वान वीर विजय का शासनकाल बहुत कम (दो-छह) माह बताते हैं, लेकिन **एन0 वेकटरमनय्या ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज इन दी हिस्ट्री आव दी थर्ड डाईनेस्टी ऑफ विजयनगर'** में इसका शासनकाल आठ वर्ष (सन् 1422-1430 ई0) तक स्वीकार किया है। **नूनीज के अनुसार "उसके शासन काल में कोई महत्वपूर्ण बात नहीं हुई"।** परन्तु वीर विजय के शासन काल की दो घटनाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। पहली विजयनगर तथा बहमनी सुल्तान के मध्य संघर्ष की तथा दूसरी विजयनगर और उड़ीसा के गजपति के साथ संघर्ष की। चूँकि राज्य की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उसके पुत्र देवराय द्वितीय पर थी, अतः इन संघर्षों में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसने अपने योग्य पुत्र के बलबूते पर

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 130।

2 द फारगेटन एम्पाएसर - सेवल।

3 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 19।

न केवल बहमनी सुल्तान अहमद शाह को कड़ी शिकस्त दी अपितु उड़ीसा के चतुर्थ भानुदेव एवं इसके वेलमों की शक्ति को भी चकनाचूर कर दिया, राजमुद्री पर वेलम तथा वीरमद्र को पुनःप्रतिष्ठित किया तथा कोण्डवीडु पर अपनी अधिसत्ता स्थापित की। ईस्वी सन् 1430 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी तथा इसके योग्य पुत्र देवराय द्वितीय ने औपचारिक रूप से विजयनगर राज्य का ताज धारण किया।[1]

(च) देवराय द्वितीय

देवराय द्वितीय सन् 1426 ई0 में सिंहासन पर बैठा इसे **'गजवटेकर की उपाधि से नवाजा गया।'** 1428 तक देवराय ने कोदवीदु देश पर विजय प्राप्त कर ली और उसे अपने राज्य में मिला लिया।[2] अपनी सेना में मुस्लिमों को भर्ती किया।[3]

देवराय द्वितीय ने केरल पर हमला करके अपना अधिपत्य कायम किया। इसके समय फारस का राजदूत अब्दुल रज्जाक दक्षिण भारत आया था। नूनिन कहता है कि **"देवराय विक्लन, श्रीलंका, पुलकीट, पेगू, तेनासरीम और अन्य स्थानों के शासकों से कर वसूलता था"**। पर बहमनी राज्य से देवराय का सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण ही था।[4]

---

1 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 19-21।

2 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 231।

3 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 22।

4 ए कम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, पृ0 24।

सैनिक क्षमता के साथ-साथ इनकी कला और सहित्य में भी रुचि थी। मई 1446 ई0 में इसकी मृत्यु के साथ इसके गौरवशाली शासन का अन्त हुआ।[1]

(छ) विजयराम द्वितीय, प्रतापदेवराय

देवराय द्वितीय के बाद इसके अनुज विजयराम द्वितीय अथवा प्रताप देवराय ने शासन किया, पुराभिलेखीय साक्ष्यों से दोनों के साथ - साथ शासन करने की सूचनाएँ भी हैं। किन्तु विजयराम द्वितीय को राज्याधिकार से कैसे एवं किन परिस्थितियों में वंचित होना पड़ा यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। **एन वेंकट-रमनय्या ने सुझाव दिया है कि संभवतः मल्लिकार्जुल से इसने समझौता कर राजगद्दी छोड़ दी तथा पेनुगोण्ड चला गया तथा वहाँ 1455 ई0 तक शासन करता रहा। बाद में इसकी असामयिक मृत्यु हो गयी थी।**[2]

(ज) मल्लिकार्जुन

संगम वंश के इतिहास में इसका शासन काल एक प्रकार से ह्रास तथा पतन का काल रहा। इसके शासन के प्रारम्भ में ही बहमनी सुल्तान ने वेलमों की राजधानी राज कोण्ड पर अधिकार कर लिया। विवश होकर वेलम वेलुगोडु में जा कर बसे।[3] अन्य पड़ोसी राजाओं ने भी शान्ति में बाधा उपस्थित करने का प्रयास किया। बहमनी सुल्तान अलाउद्दीन द्वितीय तथा गजपति कपिलेन्द्र ने इसका लाभ उठाया तथा एक साथ सन् 1450 ई0 में क्रमशः उत्तरपूर्व की ओर से विजयनगर पर धावा बोल दिया। दोनों पक्ष से अपनी अपनी सफलता के दावे पेश किये

---

1 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 1994 ई0, पृ0 25।

2 वही, पृ0 25।

3 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, पृ0 233।

गये। लेकिन समसामयिक नाटककार गंगादास ने स्पष्ट किया है कि विजय मल्लिकार्जुन की हुई।[1]

मल्लिकार्जुन का पूरा शासन काल उथल-पुथल का काल रहा। भुल्लिकार्जुन का अन्त संभवतः शान्तिपूर्ण न रहा। श्री वैष्णव ग्रन्थ 'प्रपन्नामृतम्' के अनुसार इसके चचरे भाई विरुपाक्ष द्वितीय ने परिवार सहित इसकी हत्या कर गजगद्दी पर अधिकार कर लिया।[2]

(झ) विरुपाक्ष द्वितीय

यह अत्यन्त दुर्बल और कायर शासक था। इसका शासन काल संगम वंश के अवसान का काल रहा। नूनिज के अनुसार "यह पूर्णतया पापकर्न में लिप्त था। स्त्रियों के अलावा इसे किसी बात की चिन्ता नहीं रहती थी। यह मदिरा पान कर सदैव मदहोश पड़ा रहता था।" इससे विजयनगर राज्य पर से इसका नियंत्रण हट गया।[3] इस स्थिति का लाभ उठा कर पूर्व में गुण्डूलकम्भ से लेकर कावेरी तक के विस्तृत भू-भाग, दक्षिणी कर्नाटक तथा अधिकांश पश्चिमी आन्ध्र जिले पर सालुव नाम मात्र की विजयनगर शासन की अधीनता मानते हुए लगभग स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे।[4] नुनिज कहता है कि सम्पूर्ण विजयनगर राज्य में। सामन्त विद्रोह कर रहे थे, सर्वत्र अराजकता व्याप्त थी। सालुव नरसिंह ने अनुभव किया कि अब संगम वंश का समापन कर राजसत्ता अपने हाथ में लेने

---

1 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 25।
2 वही, पृ0 26।
3 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकंण्ठ शास्त्री, पृ0 234।
4 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 25।

से विजयनगर राज्य की रक्षा हो सकती है।[1] अन्ततः सालुव नरसिंह के डर से पौढ़ देवराम भाग गया। इसके साथ ही विजयनगर के संगम वंश का भी अन्त हो गया तथा इसके स्थान पर सालुव राजवंश की स्थापना हुई।

2. सालुव राजवंश

सालुव नरसिंह ने पौढ़ देवराय को राजसत्ता से हटा कर सालुव राजवंश की नींव डाली।[2]

(क) सालुव नरसिंह

जिन अधीन सामन्तों तथा सेनानायकों ने राजसत्ता हथियाने में इसका पक्ष लिया था, वे ही इसके विरुद्ध खड़े हो गये। अतः इसे पहले ही अपने सहयोगी तथा मित्रों से ही शक्ति परीक्षण करना पड़ा। अन्ततः उसे सफलता मिली। आन्तरिक परिस्थितियों पर काबू पाने में सालुव नरसिंह निश्चित रूप से सफल रहा किन्तु इसके कारण इसमें विदेशी शत्रुओं का सामना करने की ताकत न रह गयी।[3] वह योग्य तथा सर्वप्रिय शासक था। उसने बहमनी सुल्तानों तथा उड़ीसा के राजा के विरुद्ध युद्ध किया और खोये हुए अनेक प्रान्तों को पुनः जीत लिया।[4]

---

1 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 20-22।

2 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-3, संस्करण सन् 1994 ई0, पृ0 221।

3 विजयनगर साम्राज्य - डा0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण सन् 2004 ई0, पृ0 30-31।

4 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-3, संस्करण सन् 1994 ई0, पृ0 221।

इसके समय में बाधित अश्व व्यापार पुनः चालू हो गया। दुर्भाग्य से विजयनगर साम्राज्य का यह त्राता अधिक दिन तक सत्ता का भोग न कर सका। उदयगिरि की पराजय से इसे गहरा आघात लगा तथा पाँच वर्ष के अत्यन्त अल्प शासन के बाद सन् 1490 ई0 में यह परलोक सिधार गया।[1]

(ख) सालुव नरसिंह के उत्तराधिकारी तथा इस वंश का अंत

सालुव नरसिंह के दो बेटे थे, तिम्मभूप तथा इम्मडि नरसिंह। ये दोनों इसकी मृत्यु के समय अप्यस्क थे। अतएव इसने तुलुव वंशीय तुलुव ईश्वर के पुत्र एवं अपने अति विश्वसनीय सेनानायक नरसा नायक को इसकी देख-भाल की जिम्मेदारी सौंप दी। सालुव नरसिंह की मृत्यु के बाद नरसा नायक ने सबसे पहले ज्येष्ठ तिम्मभूप को जो पिता के जीवन काल में युवराज बना था, गद्दी पर बैठाया तथा इसके अवस्यक होने के कारण राज्य का सारा काम काज वह स्वयं देखने लगा। इससे राज्य के बहुत से मंत्री उसके शत्रु बन गये और इन लोग ने तिम्मभूप की हत्या करवा दी। इसके बाद इसके अनुज इम्माडि नरसिंह को गद्दी पर बैठाया। बाद में नरसा की इससे अनबन हो गयी और वह राजधानी छोड़ पेनकोण्ड चला गया।[2]

कुछ दिनों बाद नरसा और इम्माडि नरसिंह में समझौता हो गया। वास्तव में शासन की संम्पूर्ण सत्ता इसी के हाथ में आ गयी थी। बीजापुर के सुल्तान

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 235।

2 ए कम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, जिल्द पाँच, पृ0 1063।

आदिल शाह से भी इसका आमना-सामना हुआ था। सन् 1503 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी।[1]

नरसा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र वीर नरसिंह ने अपने पिता के दायित्व को सम्भाला। परन्तु बाद में इसने सन् 1505 ई0 में इम्माडि नरसिंह की हत्या कर दी। इस प्रकार सालुक राजवंश का अंत हो गया।[2]

3. तुलुव राजवंश

इम्माडि नरसिंह के दुःखद अन्त के साथ विजयनगर के सालुव वंश का भी अन्त हो गया तथा इसके स्थान पर तुलुव राजवंश की स्थापना हुई।

(क) वीर नरसिंह

राजा की हत्या तथा इसके बाद राज्य के अपहरण से वीर नरसिंह की स्थिति किसी प्रकार सुगम नहीं रही। इसके सम्पूर्ण जीवन काल में इसके लिए फूलों की सेज न होकर काँटों की सेज बना रहा।[3]

युसुफ आदिल खाँ ने अपने राज्य का विस्तार तुंगभद्रा के इस पार तक करने की सोची और नदी को पार कर उसने कर्नूल के चारों ओर घेरा डाल दिया। लेकिन आदिल खाँ को पीछे हटना पड़ा।[4]

पुर्तगालियों से मैत्री पूर्ण सम्बंध स्थापित किया। सन् 1509 ई0 में जब वीर नरसिंह उम्मत्तूर पर नये आक्रमण की तैयारी कर रहा था, तभी उसकी मृत्यु

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-3, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 237।
2 वही, पृ0 234।
3 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, पृ0 34।
4 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकण्ड शास्त्री, पृ0 238।

हो गयी।[1] नूनिज के अनुसार **"जब वह मृत्यु शैय्या पर पड़ा तब इसने अपने मंत्री सालुव तिम्म को बुलाकर यह आदेश दिया कि वह इसके सौतेले भाई कृष्णदेवराय की आँखें निकाल कर ले आए, ताकि इसके बाद इसके आठ वर्षीय पुत्र के लिए विजयनगर की गद्दी सुरक्षित हो जाए। उसने मंत्री ने आदेश पूरा किया, किन्तु कृष्णदेव राय के स्थान पर उसने एक बकरी की आँखें निकालीं और राजा के सामने रख दीं। राजा इससे सन्तुष्ट हुआ और शांति की मौत मरा।"** नीलकंठ शास्त्री ने स्पष्ट किया है कि दोनों भाइयों में मनमुटाव का कोई प्रमाण नहीं मिलता। दूसरी ओर स्थानीय परम्पराओं से पता चलता है, कि वीर नरसिंह ने स्वतः कृष्णदेव राय को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था। किन्तु राज्य लोभ में जिस प्रकार इसने अपने स्वामी तथा पाल्य की हत्या की थी, उसके परिप्रेक्ष्य में वीर नरसिंह के लिए यह असम्भव नहीं दिखता।

(ख) कृष्णदेवराय

वीर नरसिंह के काल कवलित होने के बाद इसका सौतेला भाई कृष्णदेवराय विजयनगर की राजगद्दी पर बैठा। इसका राज्याभिषेक शक संवत् 1432 की श्री जयन्ती को तद्नुसार 8 अगस्त 1509 ई0 को भारी धूम धाम से सम्पन्न किया गया।[2] नीलकंठ शास्त्री के अनुसार **"राज्याभिषेक के लिए कृष्ण जन्माष्टमी तिथि का चुनाव इसे कृष्ण का अवतार दिखाने के लिए किया गया था।"**

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकण्ड शास्त्री, पृ0 238।

2 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 35।

कृष्ण देवराय विजयनगर के राजाओं में सर्वाधिक योग्य था।[1] **पायस कहता है, "वह वीर सभी बातों में आदर्श था"।** पर कृष्णदेव राय विजयनगर की जिस राजगद्दी पर बैठा, वह फूलों का नहीं अपितु काँटो की बनी थी। राजनैतिक परिस्थितियाँ प्रतिकूल थी। कृष्णदेव राय ने इन परिस्थितियों को अपने बस में कर लिया।

राज्य ग्रहण के बाद सबसे पहले कृष्णदेवराय ने बहमनियों के विरुद्ध अभियान चलाया। इसी लड़ाई के दौरान युसुफ आदिल खाँ मारा गया। जिससे शिशु बीजापुर राज्य में विभ्रम, आशान्ति एवं भय की स्थिति उत्पन्न हो गयी।[2]

कृष्णदेव राय ने महमूद शाह द्वितीय को जिसे अमीर-बरीद इ मलिक ने कैद कर रखा था, को मुक्त कराकर उसे पुनः गद्दी पर बैठाया तथा इस उपलक्ष्य में यवनराज्यस्थापनाचार्य की पदवी धारण की। कृष्णदेवराय ने ऐसा सोची समझी राजनीति के तहत किया। ऐसा करके वह बहमनी सुल्तानों को आपस में लड़ा कर सदा के लिए विजयनगर के इस काँटे को समाप्त करना चाहता था।[3]

इसके बाद ही कृष्णदेव अन्य शत्रुओं उम्मंत्तूर के विद्रोही सामन्त तथा उड़ीसा के गजपति शासक से लड़ाई की। उड़ीसा के गजपति प्रतापरुद्र की कृष्णदेवराय के हाथ पराजय[4] ने तेलंगाना के कुतुब शाही शासक को उठने का मौका दिया और उड़ीसा में कृष्णदेवराय को व्यस्त देखकर उसने विजयनगर राज्य की सीमा पर स्थित दंगल तथा गुन्टूर के किलों पर कब्जा कर लिया। कृष्णदेव

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 222।
2 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 36।
3 ए कम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, जिल्द पाँच, पृ0 240।
4 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 222।

राय ने इस अभियान के लिए सालुव तिम्म को 2000,000 सेना के साथ इसके प्रतिरोध के लिए भेजा। सालुव तिम्म कुली कुतुब शाह की सेना को बुरी तरह पराजित कर अधिकारियों सहित इसके सेनानायक मदर-उल-मुल्क को बंदी बनाकर विजयनगर भेजकर कुछ दिन तक कोण्डवीडू में रुक कर वापस आ गया।[1]

जब कृष्णदेव उड़ीसा अभियान जो सोलहवीं सदी के भारतीय इतिहास की सबसे शानदार सैनिक घटना थी, में व्यस्त था, इस्माइल आदिल खाँ ने रायचूर पर फिर से अधिकार कर लिया। 19 मई 1520 ई0 में इन दोनों में निर्णायक युद्ध हुआ जिसमें अन्ततः कृष्णदेवराय विजित हुआ। इस्माइल आदिल शाह जान बचाकर भाग खड़ा हुआ।[2]

कुछ दिनों पश्चात् इस्माइल आदिल खाँ का दूत असद खाँ लारी विजयनगर आया और रायचूर दुर्ग सहित सभी जीते हुए प्रदेश को इस्माइल आदिल खाँ को वापस करने का आग्रह किया। कृष्णदेवराय ने शर्तों के तहत प्रस्ताव किया कि यदि इस्माइल आदिल खाँ स्वयं उपस्थित होकर साष्टांग इसके चरण का चुंबन करे, तो वह उसके समस्त जीते हुए प्रदेश तथा रायचूर दुर्ग वापस कर देगा। इस्माइल ने यह शर्त मान ली और अपनी माता के साथ उससे मिलने का वादा किया। किन्तु निर्धारित समय पर जब कृष्ण देवराय यहाँ आया तो इस्माइल आदिल खाँ नदारत मिला। इससे कृष्णदेवराय को बड़ा गुस्सा आया

---

1 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, पृ0 39।
2 ए कम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, जिल्द पाँच, पृ0 1076।

और बीजापुर पर आक्रमण कर भारी मात्रा में लूट पाट की। बीजापुर में सफलता के बाद इसने सालुव तिम्म का दमन किया।[1]

कृष्ण देवराय सोलहवीं शती ई0 के पूर्वार्द्ध का एक महान् विजेता, कुशल योद्धा, सेनानी, सैनिक संगठन कर्ता, राजनैतिक, विद्वान तथा साहित्य एवं कला का उदार संरक्षक था। **धार्मिकता की भावना उसमें भरपूर थी। उदयगिरि से अपनी राजधानी लौटते समय कृष्णदेव तथा उसकी दोनों रानियों तिरुमाला देवी एवं चिंता देवी के साथ वेंकटेश्वर का दर्शन पूजन किया। इसने 'आमुक्तमाल्यद' नामक तेलुगु ग्रंथ की रचना की।** यह विद्वानों का आश्रयदाता भी था, उसके दरबार में तेलुगु के आठ कवि (अष्टदिग्गज)[2] रहते थे। इसने अपनी माता नागला के नाम पर नागलपुर नामक नगर बसाया। पुर्तगाली यात्री डेमिगों पायस ने उसके बारे में कहा है - **"वह इतना विद्वान तथा पूर्ण शासक है जितना कि होना संमत है। वह प्रसन्नचित्त तथा हास्यप्रिय है, वह विदेशियों को सम्मानित करता तथा दयापूर्वक उनका स्वागत करता है। वह एक महान् तथा न्यायप्रिय शासक है। अपने पद, सेना तथा भूमि की दृष्टि से वह किसी सम्राट से बढ़कर है।"**

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास, पृ0 243।

2 आठ दिग्गजो में (1) अल्लसानि पेद्दन (2) नन्दि तिम्मन (3) मट्टमूर्ति (4) धूर्जटि (5) माडच्यगारि मल्लन (6) अय्यलराज राममद्र (7) विंगलि सूरन्न (8) तेनालीराम कृष्ण के नाम मिलते है।

(ग) अच्युतदेवराय

कृष्णदेव राय के बाद अच्युतदेवराय उसका उत्तराधिकारी बना। इसका सम्पूर्ण शासन काल आपसी झगड़े झंझट में ही बीता।[1]

अच्युतदेवराय की सन् 1542 ई0 में मृत्यु हो गयी। उसके बाद वेंकट प्रथम तथा तिरुमल प्रथम ने शासन किया।

(घ) सदाशिव एवं रामराय

सदाशिव तुलुव राजवंश का अन्तिम ज्ञात शासक है। रामराय ने इसे कड़े पहरे में रखकर वास्तविक सत्ता अपने हाथ में ले ली। धीरे धीरे यह राजकीय उपलब्धियाँ भी धारण करने लगा। हाँ, रामराय तथा इसके दोनों भाई तिरुमल तथा वेकटाद्रि प्रति वर्ष एक दिन सदाशिव के पास जाकर इसे साष्टांग अभिवादन कर अपने राजा का वैधानिक अधिकार जताते थे।[2]

रामराय ने विजयनगर की पारम्परिक तटस्थता की नीति का परित्याग कर दक्षिण की मुस्लिम सल्तनतों की अन्दरूनी राजनैतिक में दखलंदाजी शुरू कर दी। किन्तु मुस्लिम शासक इसकी चाल को समझ गये। वे कूटने के बजाय आपस में संगठित हो गये। इस प्रकार इसे अपनी गलत नीतियों की भारी कीमत चुकानी पड़ी और यही नीति अन्ततः विजयनगर राज्य के ह्रास का कारण बनी।[3]

सन् 1542 ई0 में बीजापुर तथा अहमदनगर के राजाओं ने आपसी मतभेद भुलाकर निश्चय किया कि ये लोग विजयनगर के विरुद्ध खुलकर सैनिक

---

1 ए कम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, पृ0 1084।
2 वही, पृ0 1086।
3 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, पृ0 49।

कार्यवाही करें। इस समझौते के तहत इब्राहीम आदिल शाह ने अदोनी के दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। बाद में आदिल शाह द्वारा किये गये अचानक आक्रमण से उसे समझौता करना पड़ा। सन् 1542-43 ई0 में अहमदनगर के बुरहान निज़ाम शाह के साथ मिलकर विजयनगर पर आक्रमण कर इसके कुछ प्रदेशों को अपने कब्जे में कर लिया। लेकिन रामराय ने नीति से बुरहान निज़ाम शाह को अपनी ओर मिला लिया तथा लगातार तीन युद्धों में आदिल शाह को पराभूत कर उसकी शक्ति कुचल दी। सन् 1552 ई0 तक रायचूर तथा मुदूल पुनः रामराय के अधिकार में आ गये।[1]

सन् 1553 ई0 में बुराहन निज़ाम शाह मर गया तथा राज्याधिकार इसके पुत्र हुसैन निज़ाम शाह को मिला। इसने सन् 1558 ई0 में गोलकुण्डा के शासक इब्राहीम कुतुब शाह के साथ मिलकर बीजापुर पर आक्रमण कर गुलबर्गा को घेर लिया। बीजापुर के शासक ने रामराय से सहायता की अपील की। रामराय ने उसकी सहायता की और शत्रु को वापस जाने के लिए विवश कर दिया। अहमदनगर, गोलकुण्डा, बीदर की शक्ति समाप्त हो गयी थी तथा बीजापुर इसकी दया पर आश्रित था।[2]

रामराय के ही समय तालीकोट का युद्ध सन् 1665 ई0 में लड़ा गया।[3]

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकण्ठ शास्त्री, पृ0 251।
2 ए कम्पेहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया - स0 हबीब, निज़ामी, पृ0 48-49।
3 तालिकोटा के युद्ध का विस्तार पूर्ण वर्णन तृतीय अहयाय में किया गया है।

4. अरविडु वंश

(क) तिरुमल

तालीकोट (रक्षसी तंगडी) युद्ध के बाद सदाशिव ने पेनुकोण्ड को केन्द्र मान कर नए सिरे से शासन प्रारम्भ किया।[1] पर रामराय (कृष्णदेव राय का साला) के भाई सलकराजु तिरुमल ने सदाश्वि के प्रतिशासक के रूप में सारी शक्ति अपने हाथ में ले ली। अन्ततः सन् 1570 ई0 में इसने सदाशिव को परास्त कर पेनुकोण्ड पर अधिकार कर अपने को विजयनगर का शासक घोषित कर दिया। इसने अरवांडु राजवंश की नींव डाली। इसने पेनुगोण्ड को राजधानी बना कर विजयनगर की सीमा के विस्तार की शुरूआत की और इसे सफलता भी मिली।[2]

(ख) श्रीरंग प्रथम एवं वेंकट द्वितीय

सन् 1570 ई0 में जब तिरुमल सम्राट के रूप में सिंहासन पर बैठा, उस समय इनकी अवस्था बहुत अधिक हो चुकी थी। अतः दो वर्ष बाद इसने ज्येष्ठ पुत्र श्रीरंग प्रथम को राजगद्दी पर बैठा कर अवकाश ग्रहण कर लिया।[3]

श्रीरंग प्रथम ने विजयनगर साम्राज्य के पुनरुद्धार की कोशिश जारी रखी, लेकिन सफलता न मिली।[4]

सन् 1585 ई0 में जब श्रीरंग प्रथम निःसन्तान परलोक सिधार गया तो इनके छोटे भाई वेंकट द्वितीय ने राजगद्दी ग्रहण की। इसने विजयनगर राज्य की खोयी शक्ति तथा प्रतिष्ठा को बहुत कुछ वापस ला दिया।[1]

---

1 भारत का इतिहास - डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 224।
2 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, पृ0 51।
3 वही, पृ0 52।
4 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकण्ठ शास्त्री, पृ0 256।

वेंकट द्वितीय के कई रानियाँ थी, किन्तु यह निःसंतान था। इसके समय में राजधानी में कुछ दल गठित हो गये जो अपने अपने लोगों को उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। ऐसी स्थिति में वेंकट द्वितीय ने अपने भतीजे श्रीरंग द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। गठित दलों के बीच लड़ाई हुई जिसमें श्री रंग द्वितीय के पुत्र रामदेव को छोड़कर इसके परिवार के सभी सदस्य मारे गये। लोगों ने सहानुभूति वंश रामदेव को गद्दी पर बैठाया।[2]

(ग) वेंकट तृतीय

रामदेव को न कोई पुत्र था, न भाई, अतः इसने अपने चचेरे भाई पेड़ वेंकट (वेंकट तृतीय) को जो रामराय का पौत्र था, अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इसके समय कोई विशेष राजनैतिक घटना घटित नहीं हुई। सन् 1641 ई0 में इसकी मृत्यु के बाद वेंकट तृतीय गद्दी पर बैठा लेकिन यह बिना राज्य के राजा के रूप में जीवित रहा।[3]

इस प्रकार अपनी स्थापना से लगभग तीन शताब्दी बाद कर्नाटक के विजयनगर साम्राज्य का अपनी उन्नति के शिखर पर पहुँच कर अंत हुआ। इस लम्बी अवधि में अनेक राजनैतिक उतार-चढ़ाव के मध्य इसके शासकों ने अपने उत्तर के मुसलमान पड़ोसियों से बराबर लड़ाई लड़ी, मदुरा की सुल्तानशाही को समाप्त किया तथा दक्षिणापथ को इस्लाम के आक्रमण से मुक्त रखा। पुर्तगालियों तथा ईसाइयों ने भारतीयों को ईसाई धर्म में दीक्षित करने की कोशिश की, पर हिन्दू राजाओं ने उनके नापाक इरादों को विफल कर दिया।

---

1 विजयनगर सम्राज्य - डॉ0 आर0 एन0 पाण्डेय, पृ0 52।
2 वही पृ0 52।
3 वही, पृ0 52-53।

इसी के समकालीन अन्य साम्राज्य जो बहमनी सम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध है कि स्थापना सन् 1346 ई0 में हुई।

1.3 बहमनी साम्राज्य का उदय

मुहम्मद बिन तुगतक के शासन के अन्तिम दिनों में तुगलक साम्राज्य को छिन्न भिन्न करने वाले अनेक विद्रोह हुए, उन्हीं में से एक विद्रोह के फलस्वरूप बहमनी राज्य का उदय हुआ।[1]

दौलताबाद प्रान्त के राजस्व विभाग के बहुत सारे अधिकारी, जिनसे राजस्व वसूल करने की अपेक्षा की गयी थी, उतना राजस्व वसूल नहीं कर सके। इस कारण सुल्तान को उन पर संदेह हुआ और उसने दौलताबाद के सूबेदार को आदेश दिया और सौ अमीरों को भड़ौच भेजा। सुल्तान ने इससे पहले पड़ोसी मालवा प्रान्त के ऐसे सैकड़ों अमीरों को मरवा दिया। इन अमीरों को जब इसकी खबर हुई तो वे इस व्यवहार को सह लेने को तैयार नहीं थे। अतः वे दौलताबाद लौटे और वहाँ के सूवेदार को बंदी बना लिया और अपने में से इस्माइल मुख नामक एक व्यक्ति को नसीरुद्दीन शाह के नाम से दक्कन का बादशाह घोषित कर दिया।[2]

मुहम्मद बिन तुगलक को जब यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने भडौच पहुँच कर विद्रोहियों को परास्त किया। विद्रोहियों में से कुछ जिसमें इस्माइल के भाई, हसन गंगू जिसे 'जफर खाँ' की उपाधि से विभूषित किया गया था, के

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 206।

2 वही, पृ0 206।

नेतृत्व में षडयंत्र करके वहाँ से भाग निकले और गुलबर्गा चले आये। यहाँ हसन ने सेना को संगठित कर दौलताबाद पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया।[1]

चूँकि इस समय इस्माइल मुख बूढ़ा हो गया था और वह आरामतलब व्यक्ति भी था। अतः उसने स्वेच्छा से हसन के पक्ष में इस्तीफा देना स्वीकार कर लिया। जफर खाँ को सरदारों ने 3 अगस्त 1347 ई0 को अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमन शाह के नाम से सुल्तान घोषित किया।[2]

फरिश्ता हसन की उत्पत्ति के विषय में एक कहानी कहते हैं कि वह मूल रूप में दिल्ली के गंगू नामक एक ब्राह्मण ज्योतिषी का जो मुहम्मद बिन तुगलक का प्रिय पात्र, घरेलू नौकर था तथा आगे चलकर अपने हिन्दू स्वामी की सहायता से प्रसिद्धि को प्राप्त किया। उत्तरकालीन मुस्लिम इतिहासकारों के विवरणों से अथवा सिक्कों या अभिलेखों के प्रमाण से इस कहानी की पुष्टि होती है। वास्तव में हसन प्रसिद्ध फारसी वीर बहमन जो इस्फन्दियार का पुत्र था, का वंशज होने का दावा करता था और इस प्रकार उसके द्वारा स्थापित वंश का नाम बहमनी वंश पड़ा।[3]

इस राजवंश में जिन - जिन सुल्तानों ने शासन किया उसका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

---

1 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 206।

2 भारत का वृहत इतिहास - मजूमदार, राय चौधरी, दत्त, मैक्मिलन इण्डिया लिमिटेड, हैदराबाद, जिल्द दो, पृ0 80।

3 वही, पृ0 80।

(क) अलाउद्दीन हसन बहमनशाह

3 अगस्त 1347 ई0 को हसन गंगू के सिर पर दक्षिण की सल्तनत का ताज रखा गया जिसने और गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया, उसका नाम हसनाबाद रखा गया।[1] उसने छोटे से राज्य की सीमाओं का विस्तार करने का संकल्प किया। लगातार युद्धों के परिणामस्वरूप वह उसकी सीमाओं को उत्तर में वेनगंगा से लेकर दक्षिण में कृष्णा तक और पश्चिम में दौलताबाद से पूरब में भोगिरी तक फैलाने में सफल रहा। बादशाह छह महीने तक लगातार अस्वस्थ रहा और सरसठ[2] वर्ष की अवस्था में 11 फरवरी 1358 ई0 को हसन की मृत्यु हो गयी।[3]

(ख) मुहम्मद शाह प्रथम

मुहम्मदशाह प्रथम जो कि अलाउद्दीन हसन का सबसे बड़ा पुत्र था, उसका उत्तराधिकारी हुआ। इसने राज्य की शासन व्यवस्था को संगठित किया।[4]

यह उधमी तथा व्यवस्थित ढ़ंग से काम करने वाला प्रशासक था।[5] मुहम्मद ने तेलंगाना और विजयनगर राज्यों के विरुद्ध लड़ाइयाँ लड़ीं। लगभग सम्पूर्ण शासन काल में उसने उन राज्यों से युद्ध किया। उन राज्यों के शासकों को

---

1 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 13-14।

2 वही, पृ0 519।

3 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 215।

4 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 520।

5 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 207।

परास्त कर भारी युद्ध का हर्जाना देने को बाध्य किया।[1] इसे मिश्र के कठपुतली खलीफे से मान्यता मिली।[2] बुरहाने मआसिर का लेखक स्पष्ट रूप से लिखता है कि **"सुल्तान रहन-सहन के अधार्मिक ढंग प्रदर्शित करता था, जिससे वह असहाय अवस्था में पड़ जाता था।"** मुहम्मद को मद्यपान तथा अन्य व्यसनों से प्रेम था। सन् 1371 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी।[3]

(ग) मुजाहिद शाह

मुहम्मदशाह प्रथम की मृत्यु के बाद मुजाहिद शाह सुल्तान बना।[4] उसने अपने पिता की विजयनगर के विरुद्ध युद्ध करने की नीति को जारी रखा। उसने विजयनगर को घेर लिया परन्तु हस्तगत करने में सफल नहीं हुआ और राजा से सन्धि करके गुलबर्गा लौट गया।[5] एक षड्यंत्र के तहत उसकी हत्या कर दी गयी।[6]

(घ) दाऊद शाह

मुजाहिद खाँ की हत्या के बाद दाऊद शाह सुल्तान हुआ।[7]

(ङ) महमूद शाह द्वितीय

दाऊद का मई 1378 ई0 में वध कर दिया गया और महमूद शाह को अमीरों ने सिंहासन पर बैठाया। वह स्वभाव से शन्तिप्रिय तथा विद्या का संरक्षक

---

1 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 528-29।
2 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकण्ठ शास्त्री, पृ0 207।
3 भारत का इतिहास - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 215।
4 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 538।
5 भारत का इतिहास - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 215।
6 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 544।
7 वही, पृ0 545।

था। उसके शासन काल में विजयनगर से शन्तिपूर्ण सम्बन्ध रहा। उसके अन्तिम दिन दुःख और चिन्ताओं में बीते, क्योंकि उसके पुत्रों ने सिंहासन प्राप्त करने के कुचक्र रचे अप्रैल 1397 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी।[1]

(च) गयासुद्दीन

सुल्तान महमूद की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा गयासुद्दीन उत्तराधिकारी बना। उसकी आयु उस समय 17 वर्ष की थी। इसने सिर्फ एक माह शासन किया तथा एक माह सागर के किले में कैद रहा।[2]

(छ) सुल्तान शम्सुद्दीन

सुल्तान शम्सुद्दीन पन्द्रह वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। उसने सल्तनत के कामों में हस्तक्षेप नहीं किया। सन् 1407 ई0 में शम्सुद्दीन का मदीने में स्वर्गवास हो गया। उसने एक महीने 27 दिन शासन किया।[3]

(ज) ताजुद्दीन फिरोजशाह

सन् 1397 ई0 में हसन के एक पौत्र ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया और ताजुद्दीन फिरोजशाह की उपाधि धारण की।[4] उसने कश्मीरी दीवान द्वारा दी गयी उपाधि को कल्याणकारी समझकर अपना सम्बोधन 'रोज अफ़जू' रखा।[5] उसने विजयनगर से तीन युद्ध लड़े जिसमें दो में सफल रहा। विजयनगर की

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 215।

2 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 550।

3 वही, पृ0 553।

4 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 215-16।

5 तारीखे फरिश्ता-हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 553।

सेना ने दक्षिणी तथा पूर्वी जिलों पर अधिकार कर लिया। उसकी पराजय के उपरान्त सन् 1422 ई0 में उसके भाई अहमद ने उसे अपदस्थ कर दिया।[1] इसने भीमा नदी के किनारे फिरोजाबाद नगर की नींव डाली। हसन निज़ामी "यह एक प्रबल पराक्रमी सुल्तान था।"

(झ) शिहाबुद्दीन अहमद शाह

अहमद शाह सन् 1421 ई0 में भाई के बनवाये हुए ताज को सिर पर रखकर बादशाह बन गया।[2] इसने विजयनगर वारगंल एवं मालवा पर सफल सैनिक अभियान किये। यह अपनी राजधानी गुलबर्गा से बदलकर बीदर ले गया और उसका नाम मुहम्मदाबाद रखा।[3] उसने विजयनगर पर आक्रमण किया तथा वारंगल के सुल्तान को मार डाला। सन् 1435 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी।[4]

(ञ) अलाउद्दीन अहमद द्वितीय

गद्दी पर बैठने के साथ ही विदेशियों से घिरा रहा, सन् 1443 ई0 में अलाउद्दीन ने विजयनगर के विरुद्ध युद्ध किया। वहाँ के राय को भविष्य में नियमित रूप से कर देने की प्रतिज्ञा कर सन्धि करनी पड़ी। उम्र बीतने पर वह केवल राजकाज की उपेक्षा करके वासनाओं की तृप्ति में लग गया। बीदर में निःशुल्क अस्पताल की स्थापना की।[5]

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 216।

2 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 565।

3 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-3, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 83।

4 वही, पृ0 216।

5 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 नीलकण्ठ शास्त्री, पृ0 216-17।

(ट) हुमायूँ शाह

सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के समय उसका लड़का हुमायूँ शाह जो जालिम के नाम से प्रसिद्ध था, घर में मौजूद था।[1] उसके शासन के आरम्भ में कुछ अफसरों ने उसके भाई हसन खाँ को गद्दीनशीन करने की कोशिश की, जिसके कारण उसने उन सब को परास्त किया। इसने विदेशियों को तरजीह दी और महमूद गवाँ को राज्य का मलिक नायब बना दिया।[2] सन् 1461 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी तो प्रजा ने राहत की साँस ली।[3]

(ठ) निज़ाम शाह

हुँमायू की मृत्यु के बाद निज़ाम शाह गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था 8 वर्ष की थी। उसकी माँ मकदूमे जहाँ ने मलिक शाह तुर्क उपनाम ख्वाजा जहाँ और महमूद गवाँ की मदद से राज काज चलाया। 30 जुलाई 1463 ई0 को उसकी मृत्यु हो गयी।[4]

(ड) शम्सुद्दीन मुहम्मद तृतीय

निज़ाम शाह की मृत्यु के बाद उसका भाई महमूद उत्तराधिकारी हुआ और मुहम्मदशाह तृतीय की उपाधि धारण की। शासन का सारा कार्य महमूद गवाँ किया करता था, जिसे ख्वाजा जहाँ की उपाधि मिली हुई थी। क्योंकि सुल्तान को मदिरा पान तथा व्यभिचार का शौक था। इस कारण वजीरों ने शासन में

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ, जिल्द एक, संस्करण सन् 2003 ई0, पृ0 588।

2 दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ0 के0 ए0 नीलकंठ शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, संस्करण सन् 1990 ई0, पृ0 217।

3 वही, पृ0 218।

4 वही, पृ0 218।

महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। परन्तु 5 अप्रैल 1481 ई0 को महमूद गवाँ को फाँसी दे दी गयी।[1] इस विश्वासपात्र मंत्री के अन्यायपूर्ण फाँसी के साथ बहमनी राज्य का सारा वैभव और शक्ति नष्ट हो गयी।

(ढ) महमूद शाह

शम्सुद्दीन मुहम्मद तृतीय का उत्तराधिकारी उसका छोटा पुत्र महमूदशाह हुआ, जिसमें योग्यता एवं चरित्र का अभाव था। दक्षिणी तथा विदेशी अमीरों में संघर्ष पूर्ववत् चलता रहा। प्रतिद्वन्द्वी अमीरों तथा सूबेदारों ने राज्य के हितों की अवहेलना करके अपने स्वार्थों की ओर अधिक ध्यान दिया। उन्होंने राजशक्ति पर अधिकार कर लिया और स्वतन्त्र बन बैठे। राज्य का आकार कम हो गया और महमूद की सत्ता राजधानी के निकटवर्ती छोटे से प्रदेश तक ही सीमित रह गयी।[2]

महमूद की मृत्यु के बाद एक के बाद एक तीन सुल्तान हुए, किन्तु उसकी भाँति वह भी पहले कासिम बरीद उल मुमालिक और उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र अमीर अंली बरीद के हाथों की कठपुतली बने रहे। इस वंश का अन्तिम शासक कली मुल्लाशाह हुआ। सन् 1527 ई0 में उसकी मृत्यु के साथ बहमनी राज्य का भी अन्त हो गया।[3]

बहमनी सम्राज्य के पतन के कुछ महत्वपूर्ण कारणों को निम्नलिखित बिन्दुओं में बताया जा रहा है -

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाद एण्ड कम्पनी आगरा, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 86।

2 वही, पृ0 86।

3 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाद एण्ड कम्पनी आगरा, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 218।

1. विदेशी और भारतीय अमीरों का पारस्परिक द्वेष और संघर्ष।

2. बाद के बहमनी शासकों की अयोग्यता।

3. बहमनी शासकों की हिन्दू विरोधी नीति

4. विजयनगर राज्य से निरन्तर संघर्ष

5. प्रान्तीय अमीरों की महत्वाकांक्षाएँ।[1]

इस प्रकार बहमनी सम्राज्य के भग्नावशेषों पर पाँच राज्य उठ खड़े हुए। वे इस प्रकार थे-

1. बरार का इमादशाही वंश।

2. बीजापुर का आदिलशाही वंश।

3. अहमदनगर का निज़ाम शाही वंश।

4. गोलकुण्डा का कुतुब शाही वंश।

5. बीदर का बरीदशाही वंश।

1.4 इमाद शाही वंश

1. बरार

बहमनी राज्य के टूटने के बाद दक्षिण में एक के बाद दूसरी पाँच विभिन्न सल्तनतों का उदय हुआ। बरार में इमादशाही वंश की स्थापना हुई। इस वंश में निम्नलिखित सुल्तानों ने शासन किया।

(क) फतेह उल्ला इमादुलमुल्क

फतेह उल्ला इमादुल मुल्क बीजापुर के किसी गैर मुस्लिम का बेटा था। वह अपने शैशव काल में ही मुसलमानों के हाथों गिरफ्तार होकर मुल्क बरार के सिपहसालार जहाँ खाँ के गुलामों के गिरोह में प्रवेश पा गया। वह अत्यन्त कुशाग्र

---

1 बहमनी सम्राज्य के पतन के कारणों पर सविस्तार चर्चा तृतीय अध्याय में की गयी है।

बुद्धि का तथा, साथ ही परिश्रमी भी था। इस कारण उसकी गणना ख़ान जहाँ के निकटतम व्यक्तियों में होने लगी। खान जहाँ के स्वर्गवास के बाद फतेह उल्ला इमादुल मुल्क बहमनी सुल्तानों के गुलामों के गिरोह में दाखिल हो गया। सुल्तान मुहम्मद शाह बहमनी के शासन काल में उसने उन्नति की और महमूद गवाँ की कृपा से इमादुल मुल्क की पदवी प्राप्त की और बरार का सिपहसालार नियुक्त हुआ। सन् 1486 ई0 में इमादुलमुल्क ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा की और बरार में अपने नाम का खुत्बा और सिक्का जारी किया।[1]

(ख) अलाउद्दीन इमादुल मुल्कशाह

इस्माइल आदिल और बुरहान निज़ाम की तरह अलाउद्दीन इमादुल मुल्क भी पहला दक्षिणी शासक था, जिसने अपने नाम के साथ 'शाह' की उपाधि जोड़ी। इसने कावेल के किले को अपनी राजधानी बनाया।[2]

अमीर बरीद ने सन् 1517 ई0 में महौर के किले पर आक्रमण किया और खुदाबन्द हब्शी को मारकर किले पर अधिकार कर लिया। इमादुल मुल्क ने खुदाबन्द हब्शी के बेटों की सहायता करने का इरादा किया और इस उद्देश्य के लिये सेना एकत्र करने लगा। अमीर बरीद ने स्थिति को देखते हुए दोनों किले खुदाबन्द खाँ के बेटों को वापस कर दिया और उन्हें अमादुल मुल्क का अधीनस्थ बना दिया।[3] अमादुल मुल्क ने अवसर पाकर धीरे-धीरे किलों को अपने कब्जे में कर लिया। इससे खुदाबन्द हब्शी के बेटे परेशान हो गये और उन्होंने अपनी

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 307।

2 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 308।

3 वही, पृ0 308-09।

व्यथा बुरहान शाह से कही। बुरहान शाह ने इस बात में हस्तक्षेप करते हुए इमादुल मुल्क को कावेल में शरण लेने को बाध्य किया।

कुछ समय पश्चात् असद खाँ लारी के कहने पर इस्माइल आदिल शाह ने अपनी छोटी बहन खदीजा का विवाह अलाउद्दीन इमादुल मुल्क से कर दिया।[1] आदिल शाह उन दिन विजयनगर राज्य से युद्धरत था, अतः इमादुल मुल्क ने माहौर और रामकर के किलों पर अधिकार कर लिया।[2]

इमादुल मुल्क ने सन् 1523 ई0 में बुरहानपुर में, बुरहानपुर के शासक मीरा मुहम्मद शाह की सहायता से बदला लेने का इरादा कर लिया। दोनों पक्षों में युद्ध हुआ, जिसमें बुरहान निज़ाम प्रभावी रहा और उसने इमादुल मुल्क और मीराँ मुहम्मद शाह के हाथियों और तोपखानों पर अधिकार कर लिया। यह दोनों बादशाह युद्ध के मैदान से भाग गये।[3]

इन लोगों ने सुल्तान बहादुर गुजराती के पास शरण ली। सुल्तान बहादुर दक्षिण विजय करने के प्रयास में था। उपयुक्त अवसर पाकर वह बहुत बड़ी सेना के साथ बुरहानपुर के रास्ते से बरार आया। इमादुल मुल्क ने जब सुल्तान बहादुर का यह रवैया देखा तो उसे अपने इरादे पर सख्त शर्मिंदगी हुई। इमादुल मुल्क को विवश होकर सुल्तान बहादुर की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी और इस तरह बरार में सुल्तान बहादुर के नाम खुत्बा व सिक्का जारी हो गया।[4]

---

1 बस्तीन-अल-सलातीन - मुहम्मद इब्राहीम जुबेरी, पृ0 37-38।
2 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 308-09।
3 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 308-09।
4 बस्तीन-अल-सलातीन, पृ0 56-88।

इन्हीं दिनों सन् 1543 ई0 में अलाउद्दीन ने अपनी पुत्री "रबिया सुल्ताना" का विवाह इब्राहीम आदिलशाह के साथ कर दिया था।[1]

(ग) दरया इमाद शाह

अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा लड़का दरया इमादुल मुल्क उसका उत्तराधिकारी हुआ। इसने निज़ामशाहियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये। इसने अपनी बेटी 'दौलतशाह' का हुसेन निज़ाम शाह के साथ विवाह करता के एक अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। यह बहुत शान्ति प्रिय और संतोषपूर्ण व्यक्ति था और इसने अपना पूरा शासनकाल इसी दशा में व्यतीत किया।[2]

(घ) बुरहान इमाद शाह

दश्या इमाद शाह की मृत्यु के उपरान्त बुरहान इमाद शाह गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी आयु बहुत कम थी। इसलिए तफ़ात खाँ दकनी जो कि बहमनी वंश का गुलाम था, उसने बहुत से अधिकार प्राप्त कर लिये और बादशाह पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।[3]

तफ़ात खाँ ने इब्राहीम कुतुब शाह और बुरहानपुर के फारूकी शासकों की सहायता से बड़ी शक्ति एवं वैभव अर्जित कर लिया और बुरहान इमाद शाह को

---

1 हिस्ट्री ऑफ बीजापुर, डी0सी0 वर्मा, कुमार ब्रदर्स नई दिल्ली, संस्करण सन् 1974 ई0, पृ0 66।

2 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 310-311।

3 बस्तीन-अल-सलातीन - मुहम्मद इब्राहीम जुबेरी, पृ0 57।

'परनाला' के किले में नजरबंद कर दिया। तफात खाँ ने मुल्क में अपने नाम का खुत्बा व सिक्का जारी किया।[1]

तफ़ात खाँ के रवैये को देखते हुए मुर्तजा निज़ाम ने बरार को जीतने के इरादे से इस मुल्क में कदम रखा। तफात खाँ ने अली आदिलशाह से प्रार्थना की। अली आदिलशाह ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। मुर्तजा को जब इस बात की जानकारी हुई तो वह अपनी माता, जिसके पास उस वक्त शासन की बागडोर थी, के परामर्श से वापस आ गया।[2] लेकिन सन् 1572 ई0 में पुनः निज़ाम शाह ने बुरहान इमादशाह को मुक्त कराने के बहाने बरार पर आक्रमण कर दिया। तफ़ात खाँ ने कुतुब शाह की सहायता से निज़ाम शाही सिपहसालार चंगेज खाँ से मुकाबला किया, पर उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा।[3]

निज़ामशाहियों से पराजय के बाद वह जंगलों में इधर उधर घूमता रहा। अन्त में उसने परनाला के किले में शरण ली तथा उसके बेटे शमशेरुल मुल्क ने 'कावेल' के किले में शरण ली। परनाला का किला, जो कि एक पहाड़ पर स्थित था, का घेराव किया। चंगेज खाँ जो कि निज़ाम शाह का वफादार सिपहसालार था ने उसे ऐसा करने को मना किया, क्योंकि उस किले को जीत पाना कठिन था, परन्तु उसने किला रक्षकों को धन-दौलत का लांलच देकर अपनी ओर कर लिया। सन् 1574 ई0 में इस किले को विजित कर लिया गया। तफ़ात खाँ पुनः

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 312।

2 बस्तीन-उल-सलातीन-मुहम्मद इब्राहीम जुबेरी, पृ0 57-88।

3 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 311।

जंगल में भाग निकला जिसे सैयद हसन उस्तराबादी ने गिरफ्तार करके निज़ाम शाह के सामने पेश किया।[1]

परनाला की विजय के बाद उसने कावेल के किले को विजित किया। अब उसने तफात खाँ शमशेरुल मुल्क और बुरहान अमाद शाह को उनके परिवार सहित गिरफ्तार करके एक किले में भिजवा दिया, जहाँ एक ही रात में इन सभी की मृत्यु हो गयी। इनकी मृत्यु पर विभिन्न मत व्यक्त किये गये हैं। ये ऐसे समाप्त हुए कि उनके वंश में कोई दीया जलाने वाला न रहा।[2]

बहमनी वंश के टूटने के बाद बरार सर्वप्रथम अलग हुआ और बरार में इमाद शाही वंश की स्थापना हुई। इस वंश में बहुत कम शासक हुए क्योंकि दुर्भागवश इनके पूरे वंश को ही समाप्त कर दिया गया था। इन्होंने अपने समकालीन राज्यों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके राजनैतिक सम्बन्ध मजबूत किए परन्तु पूरा समय अन्य राज्यों से झगडें झंझट में व्यतीत हो गया।

1.5 आदिलशाही वंश

2. बीजापुर

बीजापुर के सूबेदार यूसूफ आदिल खाँ ने सन् 1489-90 ई0 में स्वतन्त्रता स्थापित की। कहा जाता है कि वह ईरान का एक गुलाम था, जिसे महमूद गबाँ ने खरीद लिया था। उसने अपने गुण और योग्यता के चलते प्रसिद्धि पायी।

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 311-312।

2 वही, पृ0 312।

फरिश्ता का मत है कि वह टर्की के सुल्तान का पुत्र था।[1] उसके बड़े भाई मुहम्मद द्वितीय ने, जो अपने पिता के बाद गद्दी पर बैठा, उसकी हत्या का आदेश दे दिया। इससे बचने के लिए वह सत्रह वर्ष की उम्र में अपने देश से भागकर पहले फारस फिर भारत आया। यहाँ उसने अपने को गुलाम बतलाकर बहमनी सुल्तान के मंत्री के हाथ बेच दिया। फरिश्ता **"वह कामकाज के साथ आनन्द मिला देता था। पर आनन्द को कामकाज के बीच नहीं आने देता था।"**[2]

यूसुफ आदिल शाह के बाद युसुफ का पुत्र इस्माईल आदिलशाह (सन् 1510-1534 ई0), इस्माईल का पुत्र मल्लू (सन् 1534 ई0), मल्लू का भाई इब्राहीन आदिलशाह प्रथम (सन् 1534 - 1557 ई0) तथा इब्राहीम का पुत्र अली आदिलशाह (सन् 1557-1579 ई0) इन सुल्तानों के राज्य काल में अशान्ति का वातावरण व्याप्त रहा। इसी वंश में इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय शासक हुआ। इसके विषय में मिडोल टेलर अपनी पुस्तक 'ए नोबल क्वीन चाँदबीबी' (ए रोमांस ऑव इण्डियन हिस्ट्री में) में लिखा है - **"वह समस्त आदिलशाही वंश में सबसे बड़ा था तथा अधिकतर विषयों में इसके संस्थापक को छोड़कर सबसे अधिक योग्य और लोकप्रिय था।"**

बहमनी राजवंश के विघटन के बाद दूसरा राजवंश आदिलशाहियों (बीजापुर) का था। इस राजवंश का इतिहास भी अपने पड़ोसियों के साथ संघर्ष की कहानी कहता है।[3]

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 312।

2 वही, पृ0 1-6।

3 चूँकि बीजापुर राज्य का वर्णन मेरे शोध विषय के अन्तर्गत आया है, अतः इस राज्य की सविस्तार चर्चा तृतीय अध्याय के अन्तर्गत की गयी है।

1.6 निज़ाम शाही वंश

3. अहमदनगर

अहमदनगर राज्य का संस्थापक निज़ामुलमुल्क बहरी का पुत्र मलिक अहमद था। जो गोदावरी के उत्तर पाथरी के वंशानुगत हिन्दू राजस्व अधिकारियों के परिवार से उत्पन्न था। महमूद गवाँ के विरुद्ध रचे गये षड्यन्त्र में प्रमुख रूप से भाग लिया था और इसकी मृत्यु के बाद प्रधान मंत्री बना।

मलिक अहमद को जुन्नार का सूबेदार नियुक्त किया गया। पर सन् 1490 ई0 में उसने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। इसने अहमदनगर शहर की स्थापना की। सन् 1499 ई0 में दौलताबाद पर अधिकार किया। उन्नीस वर्षों तक शासन करने के बाद सन् 1508 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका पुत्र बुरहान निज़ाम शाह सुल्तान बना। उसका पूरा शासन काल अपने पड़ोसियों से युद्ध में बीता। उसका उत्तराधिकारी हुसैन निज़ाम शाह सन् 1565 ई0 में विजयनगर के विरुद्ध मुस्लिम संघ में सम्मिलित हो गया। इसी के समय भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध "तालीकोटा का युद्ध" लड़ा गया। उसी वर्ष उसकी मृत्यु के बाद मुर्तजा निज़ाम शाह प्रथम सुल्तान बना। अल्पायु का होने के कारण शासन की बागडोर उसकी माँ के हाथों रही, परन्तु वयस्क होने पर उसने शासन अपने हाथों में ले लिया। वह एक विलास प्रेमी नवयुवक था तथा अपने शत्रुओं से मुकाबला करने में अयोग्य था। 5 जून सन् 1588 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के बाद मीरन हुसैन, इस्माइल निज़ाम शाह, बुरहान निज़ाम शाह

द्वितीय इब्राहीम निज़ाम शाह, अहमद शाह, बहादुर शाह, मुर्तजा निज़ाम शाह द्वितीय ने शासन किया।

अहमद नगर के इतिहास में चाँदबीबी की भूमिका विशेष महत्त्व रखती है। इसने मुगलों के आक्रमण का सामना किया। यह अपनी सैन्य कुशलता तथा कूटनीतिज्ञता के कारण भारतीय इतिहास की वीरांगनाओं में प्रमुख स्थान रखती है।[1]

1.7 कुतुब शाही वंश

4. गोलकुंडा

गोलकुंडा का मुस्लिम राज्य वारंगल के पुराने हिन्दू राज्य के खंडहरों पर कायम हुआ, जिसे बहमनियों ने सन् 1424 ई0 में जीत लिया था।[2] बहमनी राज्य के पतन के बाद इस वंश का उदय हुआ। इब्राहीम कुतुब शाह के शासनकाल में शाह आखुर नामक एक व्यक्ति जो ईराक से आया था; उसने कुतुब शाही सल्तनत की सभी घटनाओं को विस्तारपूर्वक लिया है।[3] इस वंश में निम्नलिखित सुल्तानों ने शासन किया।

(क) सुल्तान कुली

सुल्तान कुली मीर अली तुर्कों के प्रसिद्ध कबीले भारलों से सम्बन्धित था। इस वंश के कुछ लोगों का यह दावा था कि सुल्तान कुली मिर्जा जहाँ शाह

---

1 चूँकि अहमदनगर राज्य का वर्णन मेरे शोध विषय के अर्न्तगत आया है, अतः इस राज्य की सविस्तार चर्चा चतुर्थ अध्याय के अर्न्तगत की गयी है।

2 भारत का वृहत इतिहास - मजूमदार, राम चौधरी, दत्त, पृ0 89।

3 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 312।

मकुतून का वंशज है। लेकिन यह बात सर्वस्वीकृत है कि सुल्तान कुली, हमदान में पैदा हुआ। सुल्तान मुहम्मद शाह लश्करी के शासन के अन्तिम चरण में सुल्तान कुली दक्षिण में आया और महमूद शाह के तुर्की गुलामों के गिरोह में शामिल हो गया।[1]

सुल्तान कुली की गणित में बहुत रुचि थी और वह हिसाब-किताब करने में माहिर था। साथ ही उसे लेखन में बहुत रुचि थी अर्थात् वह एक अच्छा लेखक था। इससे वह शाही महलों का मुनीम नियुक्त किया गया। स्त्रियाँ उसके व्यवहार से बड़ी प्रसन्न रहती थीं। उसकी शूरवीरता की धाक सारे मुल्क में जमी थी। मुहम्मद शाह ने कुली को इमारत के पद पर नियुक्त करके उसे गोलकुण्डा और उसके निकटवर्ती अंचलों का जागीरदार बना दिया।[2] शाही फर्मानों में उसके नाम के साथ 'साहबे सैफ' व 'कलम' लिखा जाने लगा।[3]

सन् 1512 ई0 में सुल्तान कुली ने 'कुतुब शाह' के नाम से सम्बोधित करके स्वयं स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की।[4] कुतुब शाह इस्माईल सफवी को अपना गुरु समझता था, इसलिए बादशाह का नाम अपने नाम से पहले लगा दिया तथा शिया मजहब का प्रचलन किया।[5]

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 291।

2 तबकाते ए अकबरी - ख्वाज निज़ाम-अल-दीन-अहमद, जिल्द तीन, पृ0 104।

3 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 292।

4 हिस्ट्र ऑव बीजापुर - डी0 सी0 वर्मा, कुमार ब्रदर्स नई दिल्ली, संस्करण सन् 1974 ई, पृ0 104।

5 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 292।

सुल्तान कुली कुतुब शाह अपने शासन काल में दक्षिणियों से मित्रता रखता था। लेकिन सुल्तान बहादुर गुजराती ने इमादुल मुल्क की मर्जी के अनुसार निज़ाम शाह पर आक्रमण किया तो सुल्तान कुली ने सुल्तान बहादुर का साथ दिया।[1]

सन् 1533 ई0 में इस्माइल आदिल शाह के एक सीमावर्ती किले पर आक्रमण किया। कुतुब शाह में इतना साहस नहीं था कि वह उसका मुकाबला कर सके। इसलिए वह जहाँ था, वहीं रहा और अपने सवारों को भेज दिया संयोगवश उसी समय इस्माइल आदिल शाह का स्वर्गवास हो गया और कुतुब शाह की सारी परेशानियाँ स्वतः दूर हो गई।[2]

कुतुब शाह ने बड़ा लम्बा जीवन पाया और पर्याप्त समय तक शासन किया। जब उसके पुत्र जमशेद के सब्र का जाम भर गया, तब उसने एक तुर्की गुलाम से मिलकर अपने पिता की उम्र का पैमाना भी भर देने का निश्चय किया। सन् 1543 ई0 में तुर्की गुलाम ने तलवार के वार से उसकी उम्र का पैमाना भर दिया।[3]

सुल्तान कुली ने कुल तैंतीस साल तक शासन किया, उसके तीन बेटे जमशेद हैदर तथा इब्राहीम पिता की मृत्यु के समय जीवित थे।[4]

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 293।
2 वही, पृ0 293।
3 वही, पृ0 293।
4 वही, पृ0 293।

(ख) जमशेद कुतुब शाह

सुल्तान कुली कुतुब शाह को अपने रास्ते से हटाने के बाद जमशेद कुतुब शाह सुल्तान बना।

बुरहान निज़ाम शाह ने जमशेद को मुबारकबाद देने के लिए शाह ताहिर को गोलकुण्डा भेजा। शाह ताहिर ने जमशेद से इस बात का वायदा लिया कि वह सदैव निज़ाम शाह से मित्रता बनाये रखेगा।[1]

कुछ दिनों पश्चात् निज़ाम शाह और आदिल शाह में सम्बन्ध खराब हो गये। निज़ाम शाह के उकसाने पर जमशेद कुतुब शाह ने काकुनी में एक सुदृढ़ किले का निर्माण कराया। आदिल शाह ने इस ओर ध्यान नहीं दिया इससे जमशेद कुतुब शाह का हौसला और बढ़ गया और उसने आदिल शाह के दूसरे परगनों और किलों पर अधिकार करने का इरादा किया। जमशेद कुतुब शाह ने सबसे पहले किलों 'अहतकर' की तरफ चला, जो सागर के निकट स्थित था। वहाँ पहुँच कर उसने किले का घेराव किया। इसी समय आदिल शाह ने रामराय और निज़ाम शाह से सुलह कर ली और असद खाँ लारी को कुतुब शाह के मुकाबले के लिए रवाना किया। ऐसी स्थिति को देखकर कुतुब शाह बहुत परेशान हुआ।[2]

असद खाँ लारी ने काकुनी के किले को घेर लिया और तीन मास के अन्तराल में किसी न किसी तरह किले को जीत लिया; इसी दौरान जमशेद कुतुब शाह और असद खाँ में युद्ध हुआ, जिसमें कुतुब शाह के नाक और होंठ जख्मी

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 294।

2 वही, पृ0 294।

हो गये। मुल्ला महमूद ने इस परिणाम को पहले ही बता दिया था, जिससे गुस्सा कर जमशेद ने मुल्ला महमूद की नाक कटवा कर उसे शहर से बाहर निकलवा दिया था। जब मुल्ला महमूद की भविष्यवाणी सही निकली तो जमशेद अपने किये पर बहुत पछताया और उसने एक अमीर को मुल्ला महमूद को कुतुब शाही दरबार में लेकर आने के लिये खाना किया। मुल्ला महमूद ने जवाब दिया **"मुझे अभी तक दूसरी नाक नसीब नहीं हुई जब वह मिल जायेगी तो मैं बादशाह की सेवा में उपस्थित होने का प्रयत्न करूँगा।"**[1]

इसके बाद कुतुब शाह ने आदिल शाह से सुलह कर तथा तेलंगाना के अधिकतर भागों पर कब्जा हो गया। फिर जमशेद कुतुब शाह को बीमारी ने घेर लिया और उसे तीव्र ज्वर आया, जिससे सन् 1550 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी। इसने सात वर्ष और कुछ महीने शासन किया।[2]

(ग) इब्राहीम कुतुबशाह

जमशेद कुतुब शाह का स्वर्गवास हुआ तो मुस्तफा खाँ अरदस्तानी, सलाबत खाँ तुर्क और दूसरे गणमान्य अधिकारियों ने जमशेद के दो वर्ष के बेटे को सिंहासन पर बैठा दिया। लेकिन दक्षिण के लोगों को यह बात पसन्द नहीं आयी और उन्होंने मुस्तफा खाँ और सलाबत खाँ को अपने पक्ष में करके रामराय के पास एक पत्र भिजवाया। रामराय ने इब्राहीम को गोलकुण्डा भिजवा दिया। इब्राहीम बड़ी शान शौकत के साथ सिंहासनारूढ़ हुआ। मुस्तफा खाँ

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 294-95।

2 वही, पृ0 295।

अरदस्तानी को मीर जुमलंगी का पद दिया गया और अपनी बहन का निकाह उसके साथ कर दिया।[1]

सुल्तान बनने के बाद इब्राहीम कुतुब शाह ने हसन निज़ाम से समझौता किया कि दोनों बादशाह मिलकर अपनी संयुक्त कोशिशों से गुलबर्गा अहतकर के किलों पर अधिकार कर ले।[2] सन् 1557 ई0 में दोनों शासकों ने गुलबर्गा को घेर लिया। जब किले को जीतने का समय निकट आया तो कुतुब शाह के मन में यह विचार आया कि कहीं निज़ाम शाह अधिक शक्तिशाली न हो जाये। इस विचार से वह युद्ध स्थल से चला गया। निज़ाम शाह के अकेला पड़ जाने के कारण वह भी अहमदनगर चला गया।[3]

कुछ दिनों के बाद बुरीद शाह रामराय और आदिलशाह ने निज़ाम शाह पर चढ़ाई करने की इच्छा प्रकट की कुतुब शाह भी इसमें शामिल हो गया लेकिन युद्ध के प्रारम्भ हो जाने के बाद उसने पुनः वही प्रक्रिया अपनायी और युद्ध के मैदान से पलायित हो गया। अन्य सेनायें भी अपने - अपने क्षेत्रों में वापस लौट गयीं। अब इसने निज़ाम शाह से मित्रता का सम्बन्ध स्थापित किया और अपनी बेटी बीबी जमाल का विवाह निज़ाम शाह से करने की इच्छा प्रकट की। निज़ाम शाह ने इस बात को इस शर्त पर स्वीकार किया कि कुतुब शाह उसके साथ आदिल शाह से युद्ध करे।[4]

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 297।

2 वही, पृ0 298।

3 बस्तीन उल सलातीन, पृ0 86-88।

4 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो; संस्करण 2005 ई0, पृ0 298।

सन् 1563 ई0 में कुतुब शाह गोलकुंडा और हुसेन निज़ाम शाह अहमदनगर से रवाना हुए। लेकिन किले को जीते बिना ये लोग अपने - अपने क्षेत्रों में चले गये। अन्त में कुतुब शाह के प्रयत्नों से सन्धि हो गयी।[1] राजनीतिक खीचा-तानी को लेकर कुतुब शाह ने अपने बेटें अब्दुल कादिर को जहर देकर हत्या करवा दी थी।[2] सन् 1581 ई0 में इसकी मृत्यु को गयी इसने कुल 32 वर्ष कुछ महीने सत्ता सम्भाली।[3]

(घ) मुहम्मद कुली कुतुबशाह

इब्राहीम कुतुब शाह के तीन बेटे थे - मुहम्मद कुली, खुदाबंदा और सुलेमान अली। इन तीनों में मुहम्मद कुली सबसे बड़ा था। इसलिए वह पिता की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी हुआ। मुहम्मद कुली जब गद्दी पर बैठा उस वक्त उसकी आयु 12 वर्ष की थी, इसने शाह मिर्जा असफहानी की बेटी से शादी की।[4] निज़ाम शाही वंश से मित्रता का व्यवहार किया। शोलापुर और शाह दरक को जीतकर निज़ाम शाही अमीरों के सुपुर्द किया। इसके बाद कुतुब शाह निज़ाम शाही अमीरों ने सैयद मुर्तजा की सहायता से शाह दरक किले का घेराव किया। परन्तु किले के थानेदार मुहम्मद आका तुर्कमान ने वीरता का परिचय देते हुए बहुत से सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। फिर उन्होंने इस घेराव को समाप्त कर बीजापुर की ओर ध्यान दिया।[5]

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 298।

2 बस्तीन उल सलातीन, पृ0 89।

3 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 300।

4 वही, पृ0 301।

5 वही, पृ0 302।

ख्वाजा अली शीरजी, जिसे मुलिकुत्तजार भी कहा जाता है, बीजापुर के अमीरों के एक दल के साथ गोलकुण्डा आया और उसने कुतुब शाह की बहन का इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय के साथ विवाह का संदेश दिया। कुतुब शाह ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और अपनी बहन का विवाह इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय के साथ कर दिया।[1]

मुहम्मद कुली कुतुब शाह एक बजारू औरत भागवती के प्रेम पाश में फँस गया और उसने उसे एक हजार सवारों के गिरोह में शामिल कर लिया, जिससे वह अमीरों की तरह दरबार में आ जा सके। इससे उसके मिलने मिलाने का रास्ता आसान हो गया। उसने उसी के नाम से 'भागनगर' बसाया। बाद में इसका नाम हैदराबाद कर दिया।[2]

सन् 1565 ई0 में मुस्लिम सल्तनतों के साथ मिलकर विजयनगर के विरुद्ध युद्ध किया। सन् 1611 ई0 में उसकी मृत्यु के बाद से 1687 ई0 में औरंगजेब द्वारा इसके मुगल साम्राज्य में मिलाये जाने तक गोलकुण्डा का इतिहास अधिकाशंतः मुगल साम्राज्य के इतिहास से उलझा रहा।[3]

1.8 बरीदशाही वंश

5. बीदर

जब बहमनी राज्य के सुदूरवर्त्ती प्रान्तों ने स्वतंत्रता घोषित कर दी तब इसका अवशिष्ट भाग बरीदों की प्रधानता में नाम मात्र के लिए बचा रहा। सन् 1526 ई0 अथवा सन् 1527 ई0 में अमीर अली बरीद ने विधिवत् कठपुतले

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 302।

2 वही, पृ0 302-03।

3 भारत का बृहत इतिहास - मजूमदार, रायचौधरी, दत्त, मैक्मिलन इण्डिया लिमिटेड, लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण सन् 1991 ई0, पृ0 89।

बहमनी सुल्तानों के शासन को हटा कर बीदर के बरीद शाही वंश की, स्थापना की जो सन् 1618 - 1619 ई0 में बीजापुर द्वारा हड़पे जाने तक बना रहा।[1]

(क) कासिम बरीद

कासिम बरीद विदेश से ख्वाजा शहाबुद्दीन अली यज़दी के साथ दक्षिण आया। ख्वाजा शहाबुद्दीन ने उसे सुल्तान मुहम्मद शाह फारूकी के पास भेज दिया। कासिम बड़ा साहसी और वीर पुरुष था। वह संगीत के कई वाद्ययंत्रों को बजाने में निपुण था। उसे सुलेखन से बड़ा प्रेम था। उसे दकनी क्षेत्र तथा जलाना के मध्य भाग की अराजकता शान्त करने के लिए नियुक्त किया गया।[2] ये विद्रोही मराठा जाति से सम्बन्धित थे। कासिम बरीद ने इसके सरदार 'साबा जी' को मार गिराया। उसकी लड़की से अपने बेटे अमीर अली बुरीद की शादी कर दी।[3]

बादशाह ने कासिम बरीद को साबाजी के सभी परगने दे दिए और उसकी बेटी के सभी रिश्तेदारों को जो संख्या में लगभग चार सौ के थे, वे सबके सब कासिम के कर्मचारियों में सम्मिलित हो गये। इन कर्मचारियों में से अधिकांश ने धीरे-धीरे इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। उन लोगों की सहायता से कासिम बरीद ने बड़ी सत्ता प्राप्त की। इतनी बड़ी सत्ता प्राप्त हो जाने के बाद सुल्तान महमूद बहमनी के शासन काल में उसे भी अपनी स्वतंत्र सत्ता का शौक हुआ।[4]

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाद एण्ड कम्पनी आगरा, संस्करण सन् 1984 ई0, पृ0 220।

2 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 315।

3 वही, पृ0 315।

4 वही, पृ0 315।

आदिल शाह, निज़ाम शाह और इमादशाह के परामर्श से कासिम बरीद ने ओसा, कन्धार और उगयगीर के किलों में अपने नाम का खुत्बा व सिक्का जारी किया और राजधानी को कासिम ने महमूद शाह बहमनी के लिये छोड दिया। सन् 1505 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी।[1]

(ख) अमीर अली बरीद

कासिम बरीद की मृत्यु के बाद उसका बड़ा लड़का अमीर अली बुरीद सिंहासन पर बैठा। इसी के शासनकाल में सुल्तान महमूद की मृत्यु हुई और बहमनी वंश के अन्तिम बादशाह सुल्तान कलीमउल्ला ने अहमदनगर में आश्रय लिया। अमीर बरीद के शासन काल में इस्माइल आदिल ने बीदर पर कब्जा कर लिया लेकिन अन्त में अमीर बुरीद ने दोबारा इस शहर को अपने-अपने अधिकार में कर लिया। जिन दिनों बुरहानपुर के हाकिम मुहम्मद शाह और इमादुल मुल्क की प्रार्थना पर सुल्तान बहादुर मुम्लकत दक्षिण में आया, उन्हीं दिनों इस्माइल आदिल के हुक्म से अमीर बरीद बीजापुर पहुँचा। आदिल शाह ने चार हजार गरीब सवारों की एक सेना अमीर बरीद के नेतृत्व में दी और उसे निज़ाम शाह की सहायता के लिये भेजा।[2]

इस अभियान में अली बरीद ने बड़े साहस और वीरता का प्रदर्शन किया। अपने शासन के अन्तिम समय में अमीर बुरीद बुरहान निज़ाम शाह की सहायता

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 315।

2 वही, पृ0 316।

के लिए अहमदनगर गया और दौलताबाद के निकट उसकी मृत्यु हो गयी। उसे भी अपने पिता के मकबरे में दफन किया गया।[1]

फरिश्ता ने अमीर अली बुरीद के बारे में एक रोचक किस्से का वर्णन किया **"सर्दियों के दिनों में एक रात उसने बाग कमताना में व्यतीत किया। जिस समय मद्यपान द्वारा महफिल गर्म थी, चारागाह में गीदड़ों का एक झुंड पहुँच गया और शोर करने लगा। अमीर बुरीद ने अपने साथियों से पूछा कि गीदड शोर क्यों मचाते हैं? एक दरबारी ने उत्तर दिया चूँकि सर्दी बहुत अधिक है, इसलिये वह बादशाह से फरियाद कर रहे हैं। सुबह हुई तो अमीर बरीद ने हुक्म दिया कि चार हजार लिहाफ तैयार कराकर बाग में डाल दिया जाये जिससे रात के समय गीदड़ भयंकर ठंड से बच सके।"**

(ग) अली बरीद शाह

अमीर अली बरीद की मृत्यु के बाद अली बरीद शाह सुल्तान बना। वह अपने वंश का प्रथम सुल्तान था, जिसने बादशाह की उपाधि धारण की।[2]

शाह ताहिर अली बरीद की ताजपोशी में सम्मिलित होने के लिए अहमदनगर से अहमदाबाद आये, लेकिन अली बरीद की अशिष्टता के कारण वे रुष्ट होकर लैट आये। इस घटना के कारण बुरहान शाह, बरीद शाह से नाराज हो गया और उस पर आक्रमण कर दिया। बुरीद शाह ने परेशानी की दशा में कल्याण का किला इब्राहीम आदिल शाह के सुपुर्द कर दिया और उससे सहायता की प्रार्थना। इस प्रयास से बुरीद शाह को सफलता न मिली और निज़ाम शाह ने

---

1 तारीखे फ़रिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 316।

2 वही, पृ0 317।

ओसा, ओदगीर और कन्धार पर अधिकार कर लिया। बरीद शाह के पास अब केवल थोड़ा सा मुल्क रह गया।[1]

ऐसी स्थिति को देखते हुए साहब खाँ के कहने पर मुर्तजा निज़ाम शाह ने सन् 1579 ई0 में बीदर पर आक्रमण कर दिया। बरीद शाह ने विवश होकर आदिलशाह से सहायता माँगी। अली आदिल शाह ने जवाब दिया **"अमुक अमुक नाम के दो ख्वाजासरा जो तुम्हारे यहाँ नौकर हैं, यदि तुम उन्हें हमारे पास भेज दो तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"**[2] बरीद शाह ने विवश होकर अली आदिल की शर्त स्वीकार कर ली।[3] इन्हीं ख्वाजा सरा द्वारा 1580 में अली आदिल शाह की हत्या कर दी गयी थी।[4]

इसके बाद अली आदिल ने एक हजार सवार बरीद शाह की सहायता के लिये रवाना किया। निज़ाम शाह को इसकी सूचना मिली। इन दिनों चूँकि अहमदनगर में भी उपद्रव और अराजकता व्याप्त थी, इसलिये निज़ाम शाह ने मिर्जा यादगार को बीदर के घेराव के लिए छोड़ा और स्वयं अहमदनगर वापस चला गया। इन्हीं घटनाक्रम के दौरान अली बरीद शाह की मृत्यु हो गयी, इसने कुल पैंतालीस वर्ष तक शासन किया।[5]

---

1 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 317।

2 वही, पृ0 317।

3 वही, पृ0 317।

4 विस्तृत वर्णन तृतीय अध्याय में किया गया है।

5 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 317।

(घ) अली बरीद के उत्तराधिकारी

अली बरीद की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा इब्राहीम बरीद सुल्तान बना, इसने सात वर्ष तक शासन किया। उसकी मृत्यु के बाद सत्ता की बागडोर कासिम बरीद के हाथ में आई। कासिम ने तीन वर्ष तक शासन किया। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा उत्तराधिकारी बना जो गद्दी पर बैठते समय चार वर्ष का था।

सन् 1601 ई0 में बरीद शाही वंश के एक व्यक्ति ने बादशाह को अपदस्थ करके नगर से निर्वासित कर दिया। बादशाह भाग कर मुहम्मद कुली कुतुब शाह के पास भागनगर पहुँच गया और अमीर बरीद ने अपनी अलग सत्ता स्थापित की।

1.9 खानदेश

तुगलक वंश के पतन के समय फिरोजशाह तुगलक के सूबेदार मलिक अहमद राजा फारूकी ने नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के बीच सन् 1382 में खानदेश की स्थापना की।[1] खानदेश इसका नाम इस लिए पड़ा क्योंकि यहाँ के सभी सुल्तान खान की उपाधि धारण करते थे।

29 अप्रैल 1399 ई0 को उसकी मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र मलिक नासिर उत्तराधिकारी हुआ।[2] इसने असीरगढ़ के दुर्ग को हिन्दू नायकों से छीन लिया जब उसने नन्दुरबार पर आक्रमण किया, तब गुजरात के सुल्तान अहमद

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 214।

2 द किंगडम ऑव खानदेश - प्रो0 राधेश्याम, इद्रीस-ए-अबदीयात ए दिल्ली, दिल्ली, संस्करण सन् 1981 ई0, पृ0 12।

शाह ने उसे हरा दिया तथा उसे अपने प्रति वफादारी की शपथ लेने को विवश किया। अपने दामाद अलाउद्दीन अहमद बहमनी के साथ उसका युद्ध भी उसके लिए अनर्थकारी हुआ। सन् 1437-1438 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी।[1]

इसके बाद उसका पुत्र आदिल खाँ प्रथम (सन् 1438-1441 ई0) तथा पौत्र मुबारक खाँ प्रथम (सन् 1441-1457 ई0) के दो घटनाशून्य शासन कालों के पश्चात् खानदेश की गद्दी पर मुबारक खाँ के पुत्र आदिल खाँ द्वितीय ने अधिकार कर लिया।[2]

सन् 1457 ई0 में आदिलखाँ द्वितीय खानदेश के सिंहासन पर बैठा। उसने गोलकुण्डा को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। इसने 46 वर्ष आठ माह और बारह दिन तक शासन किया।[3] 1501 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी।

इसके बाद उसका भाई दाउद खाँ उत्तराधिकारी हुआ। लगभग सात वर्षों के गौरवहीन शासन काल के बाद सन् 1508 ई0 में दाउद की मृत्यु हो गयी।[4]

दाउद की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गजनी खाँ आया किन्तु राज्यारोहण के दस दिन के भीतर ही उसे विष देकर मार डाला गया।[5] तब खानदेश में अव्यवस्था का युग आरम्भ हो गया और उसके पड़ोसी गुलबर्गा तथा गुजरात के सुल्तानों ने उसकी आन्तरिक दुर्बलताओं से लाभ उठाना चाहा। साथ ही गद्दी के दो प्रतिद्वन्दी हकदारों के दल लड़ने लगे। एक दल का समर्थन अहमदनगर का

---

1 भारत का वृहत इतिहास - मजूमदार, रायचौधरी, दत्त, मैक्मिलन इण्डिया लि0 लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण सन् 1991 ई0, पृ0 78-80।

2 द किंगडम ऑफ खानदेश - प्रो0 राधेश्याम, पृ0 20-21।

3 भारत का इतिहास - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 214।

4 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 580।

5 वही, पृ0 580।

अहमद निज़ाम शाह करता था, तो वही दूसरे दल का गुजरात का महमूद बगेड़ा। अंत में बगेड़ा अपने उम्मीदवार को आदिल खाँ तृतीय के नाम से गद्दी पर बैठाने में सफल हो गया।[1]

आदिल खाँ तृतीय के राज्य काल में कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं घटी। उसकी मृत्यु 25 अगस्त 1520 ई0 को हो गयी।[2] इसके बाद उसके दुर्बल उत्तराधिकारी -

1. मीरान मुहम्मद शाह प्रथम
2. मीरान मुबारक शाह
3. मीरान मुहम्मद शाह द्वितीय
4. हसन शाह
5. मीरान राजा अली
6. बहादुर खाँ

हुए जिनमें बाहरी शत्रुओं के आक्रमणों से बचाने का साहस अथवा योग्यता नहीं थी। अंत में खानदेश को अकबर ने सन् 1601 ई0 में अपने राज्य में मिला लिया।

उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति : विहंगावलोकन

सोलहवीं शती के पूवार्द्ध में जहाँ एक ओर दिल्ली में राजवंशों की अस्थिरता और राजनैतिक उथल-पुथल का समय था तो वहीं दूसरी ओर उन

---

1 भारत का बृहत इतिहास - मजूमदार, रायचौधरी, दत्त, मैक्मिलन इण्डिया लि0 लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण सन् 1991 ई0, पृ0 80।

2 द किंगडम ऑव खानदेश - प्रो0 राधेश्याम, इद्रीस-ए-अबदीयात-ए-दिल्ली, दिल्ली, संस्करण सन् 1981 ई0, पृ0 32।

विचारों संस्थाओं एवं कार्यप्रणालिों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण समय भी था, जिन्हें आगे चलकर मुगल की संज्ञा दी गयी। यह काल उन नई शक्तियों के उदय का साक्षी था, जो आगे आने वाले समय को अनेक प्रकार से प्रभावित करने वाली थीं।

इब्राहीम लोदी के अपने सामंतों के प्रति सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। दिलावर खाँ जैसे वरिष्ठ एवं महत्वपूर्ण उमराओं के साथ जैसा व्यवहार किया उसकें फलस्वरूप उन्होंने विद्रोह कर दिया और बाबर को दिल्ली पर आक्रमण का न्योता दिया।[1]

पानीपत के युद्ध ने हिन्दुस्तान पर बाबर का अधिपत्य स्थापित कर दिया था।[2] विभिन्न युद्धों में बाबर की विजय ने हिन्दुस्तान में मुगल राज्य की नीव डाल दी थी। तथापि उसके पास इतना समय नहीं था कि वह अपनी इन विषयों को सुदृढ़ कर सकता। यही कारण था कि वह किन्ही ऐसी संस्थाओं की नीव नहीं डाल सका जो स्थायी महत्व की सिद्ध होती। वस्तुतः वह अफगान समस्या का समाधान करने में असफल रहा।

बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ बादशाह बना, परन्तु राजनैतिक परिस्थितियों के चलते सन् 1540 ई0[3] में हुमायूँ को हिन्दुस्तान से भागना पड़ा और शेरशाह ने सत्ता ग्रहण कर ली। शेरशाह की मृत्यु के बाद तथा अफगानों के पतन के पश्चात् ही मुगल साम्राज्य की पुनः स्थापना की जा सकी। 23 जुलाई 1555[4] के

---

1 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 307-08।
2 मुगल सामाज्य का उत्थान और पतन-डॉ0 आर पी0 त्रिपाठी, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, संस्करण सन् 1961 ई0, पृ0 29।
3 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 350।
4 वही, पृ0 359।

शुभ क्षणों में एक बार पुनः दिल्ली के तख्त पर हुमायूँ को बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेकिन दुर्भाग्य था कि वह सिर्फ 6 माह तक ही शासन कर सका और 26 जनवरी सन् 1556 ई0 में दीन पनाह भवन में पुस्तकालय की जुढ़ियों से गिरने के कारण हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।[1]

हुमायूँ की मृत्यु का समाचार सुनकर बैरम खाँ ने गुरूदास पुर के निकट कलानौर में 14 फरवरी 1556 को अकबर का राज्याभिषेक करवा दिया।[2] केवल मुगल शासकों ने ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मध्य युग के भारतीय शासकों में अकबर को श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया है। ईश्वरी प्रसाद लिखते है **"अकबर भारतीय इतिहास का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व का एक महत्वपूर्ण शासक था।"** [3]

अकबर को विजय और विस्तार की लालसा थी मुगल शासकों में अकबर प्रथम शासक था, जिसने सम्पूर्ण भरत में मुगल वंश का राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने अपने जीवन में काबुल से कन्धार तक और कश्मीर से लेकर विन्ध्याचल पर्वत तक के क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया।

अकबर सदैव दक्षिण को विजय करने की उधेड़बुन में रहता था। उसने खाँ आजम को दक्षिण विजय की आज्ञा दी। अकबर ने कुछ संदेश दिया कि वे उसकी अधीनता को स्वीकार कर लें। खानदेश का राज्य मुगलों की सीमा के सबसे अधिक निकट था और एक प्रकार से दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार था। उसके राजा अली खाँ ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया और वार्षिक कर देना स्वीकार किया। अन्य तीन राज्यों ने अकबर का प्रस्ताव विनम्रतापूर्वक ठुकरा

---

1 मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन - डॉ0 राम प्रसाद त्रिपाठी, पृ0 135।
2 भारत का इतिहास - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 428।
3 तारीखे फरिश्ता - हिन्दी अनुवादक डॉ0 नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, जिल्द दो, संस्करण 2005 ई0, पृ0 580

दिया।[1] अकबर ने यह सुनकर दक्षिण को जीतने का दृढ़ निश्चय किया और उसने सन् 1593 ई0 में शाहजादा मुराद और अब्दुल रहीम खानखाना को अहमदनगर पर आक्रमण करने के लिए भेजा।[2]

मुगल सेना ने सन् 1593 ई0 में अहमदनगर पर घेरा डाल दिया। इसी समय चाँदबीबी ने, जो बीजापुर की विधवा रानी तथा हुसैन निज़ाम शाह की पुत्री थी, महान् साहस आसाधारण दृढ़ता से मुगलों का सामना किया।[3]

अन्तिम रूप से इस राज्य को शाहजहाँ के राज्य काल में मिलाया गया।

इस प्रकार सम्पूर्ण अध्याय का विश्लेषण करने पर हम देखते हैं कि तुगलक राज्य के पतन के पश्चात् दो राजवंशों का उदय हुआ (1) विजयनगर (2) बहमनी राजवंश (खानदेश सर्वप्रथम अलग सत्ता स्थापित करने वाला राज्य था)। पुनः बहमनी सम्राज्य के पतन के पश्चात् पाँच राजवंश अस्तित्व में आये थे- (1) बरार (इमादशाही) (2) बीजापुर आदिलशाही (3) अहमदनगर (निज़ाम शाही) (4) गोलकुण्डा (कुतुब शाही) (5) बीदर (बरीदशाही) थे।

इन पाँच राजवंशों में मुख्तया बीजापुर एवं गोलकुण्डा को अच्छे शासक मिले। इन सल्तनतों का इतिहास अधिकाशंतः एक दूसरे के बीच तथा विजयनगर से प्रायः अनवरत कलह की कथा है। प्रत्येक में दक्षिण पर प्रभुता स्थापित करने की उच्चाकांक्षा की जिसके कारण दक्षिण आन्तरिक युद्ध का स्थल बन गया। जैसा पहले चालुक्यों एवं पल्लवों के बीच हो रहा था। अथवा अठारहवीं सदी में मराठों और निज़ामों के बीच हुआ।

---

1 मध्यकालीन भारत- एल0 पी0 शर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, संस्करण सन् 1994 ई0, पृ0 73-74।

2 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 174।

3 भारत का इतिहास (सन् 1000-1707 ई0) - आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृ0 174।